ANDHERE ME

BY PRATAP SEHGAL

अन्धेरे में



अभिनव प्रकाशन

२१-ए, दरिया गंज नई दिल्ली ११०००२

पीटर शेफर के नाटक ब्लैक कामेडी का रूपान्तर

अँधेरे में

प्रताप सहगल



नाटक के मंचन के लिए रूपान्तरकार से पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य है।

प्रकाशक :
अभिनव प्रकाशन
२१-ए, दरिया गंज
नई दिल्ली-११०००२

प्रथम संस्करण : १९७८

मुद्रक :
रमेश कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा,
नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-३२

मूल्य :
नौ रुपये
९·००

Published by R. S. Chauhan

रंगकर्मी वेदप्रकाश और सुशील बनर्जी
के लिए

फ्यूज-कट ! पावर फेलियर ! या कुछ भी ! बिजली नहीं है, सिर्फ अन्धेरा, और उस अन्धेरे में एक कामिक सिचुएशन पैदा होती है, बस इतना ही है इस नाटक का कथ्य...

नाटक केवल कामिक स्थिति ही नहीं खोलता बल्कि एक पैटर्न में बन्धी व्यवस्था पर व्यंग भी करता है...

यह पीटर शेफर के नाटक 'ब्लैक कामेडी' का रूपान्तर है. भाई वेदप्रकाश ने इसे रूपान्तिरत करने का सुझाव दिया था. पढ़ने के बाद लगा कि अपने यहाँ बिजली की जो व्यवस्था है, उस पर अच्छा-खासा व्यंग किया जा सकता है । अंग्रेजी में सम्भवत: इसका मंचन हो चुका है.

एफ-१०१, राजौरी गार्डन,
नया दिल्ली-११००२७

प्रताप सहगल

पात्र

बृज मेहता

कान्ति मल्होत्रा

छाया

कर्नल मल्होत्रा

हरीश ग्रोवर

शालू

शिवपूजन

सेठ छदामीलाल

मंच व्यवस्था—निर्देशक की सूझबूझ

पर्दा खुलता है

पूर्ण अन्धेरा

[बृज और कान्ति की आवाजें आती हैं। यहाँ कलाकार ऐसा प्रभाव दें कि जैसे वे रोशनी में घूम-फिर रहे हैं। आत्मविश्वास की झलक। फर्नीचर को इधर-उधर खिसकाने की आवाजें आती हैं। एक कुर्सी ऊपर से फेंक दी जाती है।]

बृज : अब बताओ, यह कमरा कैसा लगता है ?

कान्ति : बहुत अच्छा। मेरी तमन्ना तो यह है कि यह हमेशा ऐसा ही सजा रहे। वह लैम्प तो जैसे स्वर्गिक लग रहा है और कुर्सियों का रंग भी ठीक है। मैंने तुम्हें कहा था न कि हरा रंग इस कमरे में बहुत अच्छा लगेगा।

बृज : हरीश अगर अभी वापिस आ गया तो—?

कान्ति : वह कल सुबह से पहले नहीं आता।

बृज : हाँ, यह तो है। पर वह आज रात को ही आ गया तो ? वह तो इन पुरानी मूर्तियों के लिए पागल रहता है। जब उसे पता चलेगा कि उसका यह सामान हमने चुरा लिया है तो वह क्या कहेगा ?

कान्ति : चिन्ता नहीं करो। हमने कौन-साउसका सारा फर्नीचर चुरा

लिया है। बस यह तीन कुर्सियाँ, यह सोफा, वह मेज, यह लैम्प और यह फूलदान।

बृज : और वह बुद्ध की मूर्ति। उसके लिए यह सबसे ज्यादा कीमती चीज है।

कान्ति : ओह—चिन्ता छोड़ो यार !

बृज : तुम हरीश को जानती नहीं। वह तो अपनी इन पुरानी मूर्तियों को किसी को छूने भी नहीं देता।

कान्ति : देखो, जैसे ही सेठ छदामीलाल आकर चले जायेंगे, हम सारा सामान वैसे ही वापिस रख आयेंगे—अब उदासी छोड़ो—

बृज : असलियत यह है कान्ति कि···मेरा खयाल है कि हमें ऐसा करना ही नहीं चाहिए था !

कान्ति : क्यों नहीं करना चाहिए था। देखो तो कमरा कितना खूबसूरत लग रहा है ?

बृज : तुम तो जानती ही हो कि सेठ छदामीलाल करोड़पति है। यह सोफा, ये कुर्सियाँ उसके लिए कोई मायने नहीं रखतीं। हमारा चुराया हुआ यह सामान उस पर कोई खास असर न डालेगा। वह तो अन्धेरे में छिपे हुए एक शिल्पकार की कला देखने आ रहा है। और मेरा ख्याल तो यह है कि जैसा मैं हूं—एक गरीब कलाकार—मेरा यही रूप उसके मन की गहराइयों तक उतर जाएगा !

कान्ति : हो सकता है तुम ठीक होओ, लेकिन यह भी याद रखो कि पिताजी भी आज ही आने वाले हैं। और तुम्हारा गरीब रूप उन्हें कभी पसन्द न आएगा।

बृज : ओह, अपने बददिमाग पिता को भी आज ही बुलाने की क्या जरूरत थी।

कान्ति : या खुदा !

बृज : यह भी क्या बदतमीजी है कि वह यह देखकर कि कोई मशहूर कला-प्रेमी मेरी कुछ कला-कृतियाँ खरीदना चाहता है, मुझे अपना दामाद बनाने के लिए तैयार हो जायेंगे। सही मायनों में तो वह मुझे दामाद बनाने के काबिल ही नहीं हैं।

कान्ति : वह तो सिर्फ तुम्हें अपने पाँवों पर खड़ा देखना चाहते हैं।

बृज : और मान लो कि सेठ छदामीमल मेरी कोई भी कृति खरीदने को तैयार नहीं होता तो ?

कान्ति : चिन्ता क्यों करते हो, वह जरूर खरीदेगा।

बृज : तुम नहीं समझोगी। एक पैग दो !

(देती है। गिलास के खनकने का स्वर, सोडे की बोतल खुलने का स्वर)

मुझे एक आकाशवाणी सुनाई दे रही है। यह जो बेवकूफी हम कर रहे हैं, उससे बात बनने की बजाय बिगड़ जाएगी। हमारा सर्वनाश होगा। शुद्ध २४ कैरेट सोने जैसा सर्वनाश !

कान्ति : देखो प्रिय,
बुझे हुए दिल कभी औरत को नहीं जीत सकते।

बृज : कितना सच !

कान्ति : तुम्हारे साथ मुश्किल यह है कि तुम अपने-आपको पहले से ही हारा हुआ निश्चित मान लेते हो। अपने पिता के शब्दों में कहूं तो तुम डिटरमिण्ड डिफीटिस्ट हो !

बृज : तुम अपने पिता की जितनी तारीफ करती हो, मैं उनसे उतनी ही घृणा करने लगता हूं। इन मिलिटरी वालों से मुझे चिढ़ है···और सुनो, यह भी निश्चित है कि वह भी मुझे नफरत ही करेंगे।

कान्ति : ऐसा क्यों ?

बृज : क्योंकि मैं बेहद डरपोक आदमी हूं और वह मेरे इस गुण का मेरे सामने ही मजाक उड़ायेंगे ।

कान्ति : तुम्हें कुछ नहीं करना । बस उनके पास खड़े रहना । दर-असल उन्हें जब पता चलता है कि लोग उनसे दबते हैं, तो उन्हें दबाने में बड़ा मजा आता है ।

बृज : मैं तो दबता हूं ।

कान्ति : पर अभी तो तुम उनसे मिले भी नहीं ?

बृज : उससे क्या फर्क पड़ता है ?

कान्ति : अपना मजाक खुद तो न उड़ाओ ।

बृज : सलाह के लिए शुक्रिया !

कान्ति : वह आखिर तुमसे कहेंगे क्या ?

बृज : चाहे जो कहें, लेकिन वह मुझे तुम्हारे साथ शादी करने के लिए इन्कार नहीं कर सकते !

कान्ति : सुभानअल्लाह !

(दोनों आलिंगनबद्ध)

बृज : तुम मुझे पीले रंग में बहुत अच्छी लगती हो ।

कान्ति : उँह, अपनी टाई ठीक करो ! ऐसे बड़े भद्दे लगते हो ।

बृज : तुम परी लग रही हो ।

कान्ति : सच !

बृज : बिल्कुल सच । इससे पहले मैंने तुम्हें इतना सुन्दर कभी नहीं देखा !

कान्ति : बृज, सच बताना, मुझसे पहले तुमने कितनी लड़कियों से प्यार किया है ?

बृज : हजारों से !

कान्ति : सच्ची ?

बृज : सच्ची तो यह कि किसी से नहीं !

कान्ति : उस फोटो में जो लड़की है वह…?

बृज : वह तो मेरे साथ सिर्फ तीन महीने रही है।

कान्ति : कब ?

बृज : दो साल पहले !

कान्ति : नाम क्या था उसका ?

बृज : शालू !

कान्ति : कैसी थी वह ?

बृज : वह एक अच्छी पेन्टर थी—बहुत ईमानदार। बहुत चालाक और इतनी मुलायम जैसे ००७ पनामा स्टील ब्लेड की धार।

कान्ति : तुम्हारी उससे आखिरी मुलाकात कब हुई ?

बृज : बताया तो है…(बचते हुए) दो साल पहले !

कान्ति : पर तुमने अपने बैड-रूम में उसकी फोटो अभी तक क्यों रखी हुई है।

बृज : यह वहाँ थी, बस थी…है बस और क्या…आओ मेरे पास आओ, मुझे चूम लो, दुनिया में तुमसे अच्छा कोई भी नहीं चूमता।

कान्ति : एक बात बताओ कि यह तुम्हें उसके साथ ज्यादा अच्छा लगता था या मेरे साथ ?

बृज : क्या…कैसे…क्या…

कान्ति : आनन्द के पल !

बृज : देखो यह बातें छोड़ो। एकाध मिनट में लोग आने लगेंगे। कोई रिकार्ड लगा दो। हाँ, तुम्हारे पिता को कैसा म्यूजिक पसन्द है। बस वैसा ही लगा दो।

कान्ति : (रिकार्ड-प्लेयर के पास जाते हुए) उन्हें मिलिटरी में बजने वाली धुनों को छोड़ कर और कुछ अच्छा नहीं लगता ।

बृज : शायद मेरे पास भी कोई ऐसी धुन है—ठहरो—हाँ है । नारंगी रंग के कवर में आखिरी रिकार्ड । इस धुन का नाम 'जय जवान' या कुछ ऐसा ही है ।

कान्ति : यह ?

बृज : बिल्कुल यही ।

कान्ति : यह लगा दूं ।

बृज : यह ठीक है । लगा दो !

कान्ति : इसे चलाना कैसे है ?

बृज : बाईं ओर सिरे वाला बटन···हाँ, यही···या खुदा, यह शाम सही-सलामत निकल जाये और छदामीलाल मेरी कुछ मूर्तियाँ खरीद ले । कान्ति का दुष्ट पिता मुझे पसन्द कर ले और मेरे पड़ोसी हरीश ग्रोवर को पता न चले कि उसके पीछे हमने उसका कीमती फर्नीचर चुरा लिया है । ओह···!

(धुन शुरू होते ही रुकती है । जैसे बिजली चली गयी हो ।)

(तेज रोशनी । नाटक का शेष भाग कम रोशनी में । फ्रीज । कान्ति सोफे के पास और बृज ड्रिंक्स-टेबुल के पास)

लो फ्यूज़ उड़ गया ।

कान्ति : ओह नो !

बृज : मेरे ख्याल से उड़ गया ।

(अन्धेरे में स्विच को ऊपर-नीचे करता है ।)

कान्ति : लगता है तुम ठीक हो !

बृज : ओह नो !

कान्ति : या शायद पावर कट गयी है। मेन स्विच कहाँ है ?

बृज : हाल में !

कान्ति : कोई मोमबत्ती ?

बृज : वह भी नहीं।

कान्ति : माचिस ?

बृज : वह ड्रिक्स-टेबुल पर होनी चाहिए।

(ढूंढ़ता है।)

यहाँ नहीं है, देखो शायद रिकार्ड-प्लेयर पर हो।

(दोनों अन्धेरे में ढूंढ़ते हैं।)

मर गए। तबाही ! तबाही ! तबाही !

कान्ति : यहाँ भी नहीं है।

(टेलीफोन की घन्टी बजती है।)

बृज : पक्का ? अच्छा, मैं आता हूं !

(अन्धेरे में टेलीफोन की तरफ बढ़ता है। गिरने लगता है। सम्भलकर फोन तक पहुंचता है।)

हलो !

(फिर अचानक भयभीत स्वर में)

हलो, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, मैं ठीक हूं, बिल्कुल ठीक··· तुम ?

(कान्ति से)

तुम जरा बैड-रूम में ढूंढो !

कान्ति : पहले यहां तो ढूंढ लूं।

बृज : नहीं, नहीं, मुझे याद आ गया है, अभी, अभी···वहां बैड-

रूम में फ्यूज की तार है···वहीं ड्राअर में, जहाँ तुम्हें वह फोटो मिली थी। जाओ, जाओ ढूंढो और लेकर आओ ? जाओगी कि नहीं ?

कान्ति : मेरे ख्याल से वहाँ नहीं है।

बृज : बहस नहीं, जाओ और देखो !

कान्ति : ठीक है, जाती हूं। रिसीवर को गले में लटका लो।

(कान्ति अन्धेरे में सिर झुकाए, बांहें फैलाये हुए जाती है।)

बृज : (नियंत्रित करते हुए) आई एम सारी। मैं जानता हूं, वहीं है। तुमने ध्यान से नहीं देखा होगा।

कान्ति : पर माचिस कहाँ है ?

बृज : हम अन्धेरे में ही ठीक कर लेंगे। जाओ, जाओ, जल्दी !

कान्ति : हे भगवान, क्या मुसीबत है।

बृज : (कान्ति चली जाती है। ··आश्वस्त होकर, फोन में) हलो, अच्छा, अच्छा, अच्छा, क्या हाल है तुम्हारा ? बहुत अच्छा। यह तो बहुत अच्छा है, हाँ, हाँ, फाइन, वेरी फाइन ! बन्द करूँ, क्या कहा ··बन्द करूँ ?

(कान्ति ऊपर चढ़ जाती है। बैड-रूम में चली जाती है।)

(रिसीवर हाथ में पकड़े हुए)

कान्ति, प्रिय कान्ति !

(सन्तुष्ट होकर कि कान्ति चली गयी है। वह फोन में धीमे स्वर में बात करने लगता है।)

शालू ! तुम यहाँ क्या कर रही हो ? मेरा तो ख्याल था कि तुम कलकत्ता चली गयी हो। अभी सिर्फ छः हफ्ते ही

तो हुए हैं···कहाँ से बोल रही हो ? एयर-पोर्ट ? अच्छा, नहीं, नहीं, आज नहीं, आज तो मैं बहुत बिजी हूं। आज का ख्याल छोड़ो। देखो न बिजनेस है, आज तो मैं तुमसे बात भी नहीं कर पाऊँगा !

कान्ति : (बेड-रूम के दरवाजे से) वहाँ तो कुछ नहीं है—तुम्हारी गन्दी जुराबों को छोड़कर···मैंने तो कहा था···

बृज : अच्छा ! दूसरी ड्राअर में देखो !

(कान्ति पुनः ढूंढ़ने अन्दर चली जाती है।)

देखो, इस वक्त मैं तुमसे ज्यादा देर बात नहीं कर सकता। मैं तुम्हें कल मिल सकता हूं ? ओह, शालू, तुम समझती क्यों नहीं—आज रात तो मैं तुम्हें किसी भी कीमत पर नहीं मिल सकता···बात समझा करो, हालत थोड़ी बदल गयी है। मैं बड़ी मुश्किल में हूं। नहीं, बिल्कुल नहीं आना यही समझ लो कि पिछले महीने कुछ महत्वपूर्ण घट गया है···!

कान्ति : (अन्दर से) बृज, मुझे यहाँ कुछ दिखाई नहीं देता !

बृज : शालू, मुझे जाना है। मैं तुमसे सारी बातें फोन पर नहीं कर सकता। इस बात से उस बात का क्या मतलब ?··· हाँ, बेशक है। मेरा मतलब है कि तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि तुम्हें हर चीज वैसे ही मिलेगी, जैसा तुम छोड़ कर गयी थीं।

कान्ति : (बैड-रूम से बाहर आकर) यहाँ कुछ भी नहीं है। क्या एक तीली भी कहीं पर नहीं मिल सकती ?

बृज : चिल्लाओ मत।

(फोन में)

नहीं, नहीं, तुम्हें नहीं कह रहा। मैं तुमसे कल मिलूंगा।

राइट ! गुड बाई !

कान्ति : (सीढ़ियाँ उतरते हुए) कौन था ?

बृज : एक दोस्त…हँ…हँ…वह तार मिली ?

कान्ति : नहीं। हमें माचिस लानी पड़ेगी।

बृज : पड़ोस से माँगनी पड़ेगी। उनसे शायद एक मोमबत्ती भी मिल जाए !

(कराहने के स्वर के साथ मिस छाया का प्रवेश)

छाया : कोई है जो मेरी थोड़ी मदद करे !

बृज : मिस छाया ?

छाया : मिस्टर मेहता ?

बृज : हाँ !

छाया : मिस्टर मेहता !

बृज : हाँ !

छाया : ओह ! शुक्र है खुदा का कि तुम यहाँ हो ! मैं तो डर ही गयी थी।

बृज : क्यों ? क्या आपकी लाइट भी उड़ गयी ?

छाया : हाँ !

बृज : तब तो यह जरूर ही पावर-कट है।

(छाया को पकड़ कर सोफे के पास लाता है।)

छाया : पर ऐसा होता तो बाहर गली की बत्तियाँ कैसे जलती रहतीं। मैंने अभी खिड़की से देखा था।

बृज : तो हो सकता है कि इस बिल्डिंग का मेन स्विच उड़ गया हो !

कान्ति : वह कहाँ है ?

बृज : नीचे तहखाने में। वह तो सील है और उसे सिवाय बिजली वालों के और कोई छू भी नहीं सकता।

कान्ति : फिर क्या करें ?

बृज : उन्हें बुलाओ—जल्दी !

कान्ति : वे इतनी रात में आयेंगे ?

बृज : आना पड़ेगा ।

(अचानक बृज मिस छाया की छातियां छू लेता है । वह घबरा कर हल्का चीखती है । बृज फोन की ओर)

मिस छाया ! आपके पास माचिस तो जरूर होगी ?

छाया : नहीं है । मैं भी कैसी मूर्ख हूँ । मैं तो इस अन्धेरे में एकदम बुरी तरह से डर गयी हूँ ।

बृज : प्रिय ! आप मिस छाया, मेरे ऊपर की पड़ोसिन और आप मिस मल्होत्रा !

छाया : हलो !

कान्ति : हलो !

छाया : ऐसे में डर नहीं लगता ?

(बृज फोन मिलाता है ।)

कान्ति : क्यों न सेठ छदामीलाल को आज के लिए टाल दें ?

बृज : नामुमकिन ! उसने कहीं बाहर से खाना खाकर यहाँ आना है । हम उससे कोई सम्पर्क नहीं कर सकते !

कान्ति : अब क्या होगा ?

बृज : हलो, वन नाइन सैवन ! कैन यू गिव मी इलैक्ट्रीसिटी कम्पलेन्ट आफिस, टैगोर गार्डन···हलो···एन्गेज···प्लीज ट्राई अगेन···देखिये हम नम्बर नहीं देख सकते प्लीज ट्राई···नो मैडम, मैं अन्धा नहीं हूं ! हमारे यहाँ लाइट नहीं है···इसमें माफी माँगने की क्या बात है···हलो··· हमारे पास तो माचिस भी नहीं है । कुछ मेहमान आने

वाले हैं। इमरजेन्सी है…शुक्रिया…।

(**कमरे में**)

दिल्ली के दफ्तर मूर्खों से भरे पड़े हैं।

छाया : मेहता साहब, आप बिल्कुल ठीक फरमाते हैं।

बृज : (**फोन में, गुस्से से**) श्रीमती जी, आप मुझे नम्बर न बताइये। क्या आपने कभी अन्धेरे में डायल किया है… मुझे नम्बर मिला दीजिए। शुक्रिया!

(**छाया से**)

छाया जी, आपके यहाँ से कोई एकाध मोमबत्ती मिलने की थोड़ी-सी भी उम्मीद है।

छाया : शायद नहीं है?

बृज : 'शायद नहीं है?' (**फोन में**) कम्प्लेन्ट आफिस! मैं ई-डी/२, टैगोर गार्डन से बृज मेहता बोल रहा हूं। हमारा मेन-स्विच उड़ गया है। हाँ, हाँ, ठीक है। जरूर भेज दीजिए। जल्दी! शुक्रिया…शुक्रिया…!

छाया : अगर मेरा अन्दाजा गलत नहीं तो सामने वाले हरीश ग्रोवर के पास मोमबत्तियाँ जरूर मिल जायेंगी। वह दो दिन के लिये बाहर गया हुआ है। पर अपनी चाबियाँ वह चटाई के नीचे छोड़ जाता है।

बृज : यह हुई न बात। यह बड़ा प्रैक्टीकल आदमी है।

(**कान्ति से**)

मैं अभी देख कर आता हूं।

(**वह फोन कान्ति को थमा कर तेजी से निकलना चाहता है कि बुद्ध की मूर्ति से टकरा जाता है।**)

साला!

छाया : मिस्टर मेहता ! आप ठीक-ठाक तो हैं न ?

बृज : मुझे पता था, मैं जानता था कि यह रात मेरी जिन्दगी की सबसे मनहूस रात होगी।

(दरवाजे से टक्कर)

कान्ति : जल्दबाजी नहीं करो प्रिय !

छाया : आप कितना सही कहती हैं मिस मल्होत्रा। हमें किसी को भी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

कान्ति : (फोन में) हलो ? हलो ? (छाया से)
बृज की किस्मत देखो, यह सब आज ही होना था।

छाया : आज क्या कोई खास बात है ?

कान्ति : जो है सो तो है। कोशिश करने से और खास नहीं हो जाएगी।

छाया : पर आज है क्या ?

कान्ति : आपने सेठ छदामीलाल के बारे में कभी कुछ सुना है ?

छाया : जरूर सुना है। वही एक करोड़पति !

कान्ति : हाँ, (फोन में) हलो ? (छाया से)
वही आज आ रहे हैं।

छाया : आज रात ?

कान्ति : बिल्कुल आज रात और समझिये कि बीस मिनिट के अन्दर-अन्दर। और उस पर बुत्ता यह कि उन्हें सुनाई भी बहुत ही कम देता है !

छाया : कितना अजीब है यह सब। आप बतायेंगी कि वह किस लिये आ रहे हैं ?

कान्ति : उन्होंने बृज की मूर्तियों के कुछ फोटो देखे होंगे और उन्हें वे बेहद पसन्द आए। उनकी सेक्रेटरी ने पिछले हफ्ते फोन करके पता किया था कि क्या वह बृज की मूर्तियाँ खुद आकर

देख सकते हैं ? हमने कहा, क्यों नहीं ? उन्हें मूर्तियां इकट्ठी करने का शौक है और उन्होंने अगर आज एक भी मूर्ति खरीद ली तो बृज के वारे-न्यारे हो जायेंगे ?

छाया : एक्साइटिंग !

कान्ति : यह उसके लिए बहुत बड़ा ब्रेक है—या शायद कुछ वक्त पहले था !

छाया : ओह, तुम कुछ करो। फिर फोन मिलाने की कोशिश करो !

(**कोशिश करती हुई**) हलो ? हलो ? लगता है बम्ब गिर गया है और कोई नहीं बचा।

छाया : ऐसी बातें न करो—

कान्ति : हलो ? ओह, हाँ, कम्पलेन्ट आफिस। देखिये हमारा मेन स्विच का फ्यूज उड़ गया है—कम्पलेन्ट पहले भी की है। कोई नहीं आया। प्लीज भेजिये किसी को। क्या···? फ्लू···सबको फ्लू···तो नहीं हो गया। किसी और को भेज दीजिए। थैंक यू।···कहते हैं रात को किसी वक्त भेजेंगे। कितनी सेवा करते हैं ये !

छाया : ये लोग सेवा के लिए नहीं हैं। मर्जी से काम करते हैं। ऐसा तो है नहीं कि इस हाथ पैसे दो और इस हाथ काम लो। क्या करें, हम मिडिल क्लास के लोगों पर कोई ध्यान नहीं देता !

कान्ति : आप ड्रिंक लेंगी ?

छाया : शुक्रिया, मैं नहीं पीती। दरअसल मेरे पिता जी पक्के गांधीवादी और नशा-विरोधी समिति के चेयरमैन हैं, इसलिए···

कर्नल मल्होत्रा : डैम एण्ड ब्लास्ट ! !···कोई है ?

कान्ति : ओ डैडी, अन्दर आइए !

कर्नल : तुम बत्ती नहीं जला सकतीं···बेवकूफ ? अन्धेरे में साली दूध की बोतल से टकरा गया।

कान्ति : फ्यूज उड़ गया है। लाइट कहाँ से जले ?

कर्नल : (जलते हुए लाइटर को हाथ में पकड़े हुए प्रवेश)

छाया : कितना सुहाना लगता है लाइट देखकर !

कान्ति : आप मेरे पिता कर्नल मल्होत्रा और आप मिस छाया। ऊपर रहती हैं।

कर्नल : गुड।

छाया : मुझे अन्धेरे में बड़ा डर लगता है, इसलिए मिस्टर मेहता की शरण में पड़ी हूं।

कर्नल : कब से लाइट नहीं है ?

कान्ति : थोड़ी ही देर पहले। बस मेन स्विच उड़ गया।

कर्नल : और तुम्हारा 'वह' कहाँ है ?

कान्ति : सामने वाले फ्लैट में मोमबत्तियां ढूंढ़ रहा है।

कर्नल : तुम्हारा मतलब अपने यहां मोमबत्तियाँ भी नहीं रखता ?

कान्ति : मोमबत्ती ? माचिस भी नहीं !

कर्नल : ओह ! मतलब अव्यवस्था। बुरे लक्षण !

कान्ति : डैडी, यह तो किसी के साथ भी हो सकता है।

कर्नल : मेरे साथ नहीं।

(वह छाया को ढूंढता है। छाया पीछे हटती हुई सोफे पर जा बैठती है और कर्नल की नजर मूर्ति पर पड़ती है।)

यह क्या वस्तु है ?

कान्ति : बृज की कला का एक नमूना !

कर्नल : सच ? इसकी कीमत क्या होगी ?

कान्ति : मेरे ख्याल से वह इसे ५००० से कम में नहीं बेचेगा।

कर्नल : पांच हजार !

कान्ति : डैडी, आपको यह फ्लैट पसन्द आया। उसने इसे बड़ी अच्छी तरह से सजाया है···? नहीं···। मेरा मतलब है लगता है कि किसी रईस का फ्लैट है। हर चीज करीने से रखी हुई है।

कर्नल : बहुत खूबसूरत है। अच्छा लगता है। उसका टेस्ट एकदम अलग है।

(बुद्ध की ओर देखकर)

अब मैं समझ सकता हूँ कि कला का असली मतलब क्या होता है। हर चीज अपने आप में साफ नजर आती है।

छाया : ओ गाड !

कान्ति : क्या हुआ ?

छाया : कुछ नहीं···ऐसी ही एक बुद्ध की मूर्ति हरीश के पास भी है। दोनों आपस में कितनी मिलती हैं।

कर्नल : इसे बनाने में भी काफी पैसे लगे होंगे। क्यों ? खाता-पीता लगता है। सच में—इस पर रंग बहुत खिले हुए हैं।

कान्ति : (छाया को धीरे से) आप मिस्टर ग्रोवर को जानती हैं।

छाया : हाँ, बहुत अच्छी तरह से। हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त हैं। उसके पास ऐसी प्यारी-प्यारी बहुत-सी चीजें हैं।

(जिस सोफे पर बैठी है, उस पर पहली बार उसकी नजर पड़ती है।)

हैं···यह क्या··

कान्ति : क्या ?

छाया : यह फर्नीचर···जरूर वही ? हे राम !

कान्ति : डैडी, आप उधर बृज का स्टूडियो क्यों नहीं देखते। मैं चाहती हूं कि उसके आने से पहले-पहले आप देख लें !

कर्नल : क्या ?

कान्ति : आप जाइए तो सही। आप देखकर हैरान हो जाएँगे।

कर्नल : बहुत अच्छा साहब,

(छाया से)

एक्सक्यूज मी !

(कर्नल चला जाता है। प्रकाश तेज होता है।)

कान्ति : मिस छाया, आप हमारी बहुत अच्छी दोस्त हैं। हैं न ?

छाया : मैं कुछ नहीं जानती। इस फर्नीचर का यहाँ क्या काम ! यह तो हरीश ग्रोवर का है।

कान्ति : मैं जानती हूं कि हमने निहायत एक घटिया काम किया है। हम उसका बढ़िया फर्नीचर यहाँ ले आए हैं और बृज का टूटा-फूटा फर्नीचर वहाँ डाल दिया है।

छाया : लेकिन क्यों ? यह तो वाकई घटिया लगता है।

कान्ति : मिस छाया ! आप तो जानती हैं कि बृज के पास कुछ भी नहीं ! कुछ भी नहीं। उसकी हालत मन्दिर में घुसे भूखे चूहे से अच्छी नहीं है। और इस हालत में अगर डैडी उसे देख लेते तो वह कभी भी हम दोनों की शादी की इजाजत नहीं देते—मिस्टर ग्रोवर घर में थे नहीं कि हम उनसे पूछ लेते—इसलिये मजबूरन···

छाया : अगर हरीश को पता चल गया कि उसके फर्नीचर और मूर्तियों को किसी ने छुआ है तो वह तो पागल हो जाएगा और यह बुद्ध की मूर्ति तो सबसे कीमती चीज है उसके पास ! जानती हो इसकी कीमत कई हजार रुपए है।

कान्ति : ओह, प्लीज मिस छाया ! आप हमारी हालत समझिए ! हमने यह सब बहुत निराश और दुःखी होकर किया है। आप वादा कीजिए कि आप यह सब किसी के सामने नहीं

कहेंगी । प्लीज···प्लीज·· यह सिर्फ एक घण्टे की ही तो बात है ।

छाया : अच्छा !

कान्ति : बहुत-बहुत मेहरबानी ।

छाया : लेकिन एक बात सुन लो, सेठ छदामी लाल और तुम्हारे पिता के चले जाने के बाद सभी चीजें जहाँ थीं, वैसी ही पहुंच जानी चाहिएं !

कान्ति : मैं आपकी कसम खाती हूँ मिस छाया, आप तो हमारे लिए एक फरिश्ता हैं ।

आप ड्रिंक्स लेंगी ? ओह सारी । आप तो पीती नहीं । बीयर तो लेंगी !

छाया : हाँ, वो मैं मना नहीं करूंगी ।

(कर्नल की लाइटर हाथ में पकड़े हुए वापिसी । मंच पर रोशनी कम)

कर्नल : बहुत ही हैरानी में डाल देने वाली चीजें हैं । लगता है कि वह मूर्तिकार है ।

कान्ति : लगता है नहीं, वह है !

कर्नल : कुछ मूर्तियाँ तो अपने बगीचे में लगाने लायक हैं ।

कान्ति : यह तो बड़ा अजीब नहीं लगेगा डैडी ?

कर्नल : सारी बेबी, तुम अपनी राय बताओ ।

कान्ति : मैं नहीं चाहती कि आप अब भी मुझे बेबी बुलाएं !

कर्नल : ऐसी कोई खास बात नहीं थी । शायद हमें इनकी जरूरत पड़े ।

(लाइटर बुझा देता है ।)

कान्ति : मिस छाया, आप घबराइए नहीं । बृज बस मोमबत्ती लेकर आता ही होगा !

छाया : ठीक है, तब मैं चली जाऊँगी। मैं आपके रास्ते में न आऊँगी!

कान्ति : नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।

(सुनकर)

वृज ?

(वृज आता है।)

वृज : हलो ?

कान्ति : कुछ मिला ?

वृज : वहाँ कुछ नहीं है। अगर वहाँ पर मोमबत्तियाँ हैं तो पता नहीं वे कहाँ हैं। तुम्हें बिजली वाले मिले ?

कान्ति : उन्होंने कहा है कि थोड़ी देर बाद किसी को भेजेंगे।

वृज : कितनी देर बाद ?

कान्ति : यह तो वे भी नहीं जानते!

वृज : क्या नजरिया है इन लोगों का। घर में साली मोमबत्ती तक नहीं है। ऐसे में एक तो उस बहरे करोड़पति को मूर्तिकला दिखानी है और दूसरे तुम्हारे बंददिमाग बाप को खुश करना है।

कर्नल : (लाइटर जलाते हुए) गुड ईवनिंग!

(वृज उछलता है।)

कान्ति : वृज, आप मेरे पिता कर्नल मल्होत्रा!

वृज : (हड़बड़ाहट, घबराहट और शर्मसार) अच्छा, अच्छा, अच्छा···गुड ईवनिंग सर! आपको यहाँ देख कर कितना अच्छा लग रहा है। मैं दरअसल किसी भयावने पड़ोसी, पड़ोसी भयावने किसी बंददिमाग पड़ोसी की बात कर रहा था, आप तो जानते ही हैं···उन्होंने फोन में कहा था कि इधर आएंगे···हाँ, हाँ···अच्छा, अच्छा···

कर्नल : अच्छा, अच्छा !

कान्ति : बहुत अच्छा !

कर्नल : तुम किसी गहरी मुसीबत में लगते हो ।

बृज : नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं । सिर्फ यह फ्यूज, बस और कुछ नहीं…यह तो होता ही रहता है । मेरा मतलब है मेरी जिन्दगी में यह पहला फ्यूज नहीं है और शायद आखिरी भी नहीं होगा ।

(हँसता है ।)

कर्नल : आपके पास कोई माचिस नहीं है । ठीक !

बृज : ठीक !

कर्नल : न मोमबत्ती, ठीक !

बृज : ठीक !

कर्नल : न काम कर सकने की कुशलता । ठीक !

बृज : यह मैं कैसे कह सकता हूं !

कर्नल : कुशलता से मेरा मतलब है किसी काम को सीधे-सादे ढंग से कर लेना । हमारी जुबान में हमेशा 'आराम' की स्थिति में न रह कर 'सावधान' की स्थिति में रहना, समझे ?

बृज : समझा, मैं बिलकुल आराम की स्थिति में नहीं हूं ।

कर्नल : अब क्या करने जा रहे हो ?

बृज : करने जा रहे हो ?

कर्नल : मेरे अलफाज मत दोहराओ । हमें यह नापसन्द है ।

बृज : आपको पसन्द नहीं । मुझे अफसोस है सर ।

कर्नल : अब मेरी बात ध्यान से सुनो । यह इमरजेन्सी है । यह कोई भी देख सकता है ।

बृज : इमरजेन्सी—इमरजन्सी तो तब है, जब कोई भी कुछ नहीं

देख सकता !

कर्नल : मजाक छोड़ो—हमें सारी बात जैसी है उसे वैसे ही देखना चाहिए । ठीक ?

बृज : ठीक ।

कर्नल : अच्छा ! (लाइटर बुझाकर) समस्या—अन्धेरा—हल—रोशनी ।

बृज : क्या बात है सर !

कर्नल : हथियार—माचिस । नहीं है । मोमबत्ती । वो भी नहीं फिर बचा क्या ?

बृज : मेरी तलाशी ।

कर्नल : हां, टार्च, टार्च । क्यों ?

बृज : या कद्दू !

कर्नल : क्या कहा तुमने ?

बृज : कुछ नहीं । मुझे लगता है, मैं कुछ गड़बड़ा गया हूं हाँ टार्च! क्या ब्रिलियन्ट आइडिया है ।

कर्नल : हाँ, टार्च कहां होगी ?

बृज : वक्त क्या हुआ है ?

(कर्नल लाइटर जलाता है ।)

कर्नल : सब वक्त बर्बाद तो हो गया । पौने दस । अगर जल्दी करो तो अभी भी कुछ हो सकता है ।

बृज : शुक्रिया ! आपकी दूर-अन्देशी ने मुझे बचा लिया ।

कर्नल : अच्छा, अच्छा, कुछ करो !

बृज : हाँ साहब, मैं एक मिनिट में आया ।

कान्ति : मेरी शुभकामनाएं !

बृज : शुक्रिया ।

कर्नल : यह क्या ! (नाक-भौं सिकोड़कर)

(बृज ज्यों ही दरवाजे पर पहुंचता है कि हरीश की आवाज।)

हरीश : अरे भई कोई है ?

बृज : (फ्रीज) हरीश !!

हरीश : बृज ?

बृज : (कान्ति को) हरीश वापिस आ गया।

कान्ति : क्या, नो !

बृज : फर्नीचर !

हरीश : यह सब क्या हो रहा है ?

(मंच पर आता है।)

बृज : कुछ नहीं हरीश। कुछ नहीं। तुम उधर नहीं जाओ, इधर आओ। फ्यूज उड़ गया ! बिल्कुल अन्धेरा—सारे घर में अन्धेरा !

हरीश : तुमने बिजली वालों को फोन नहीं किया है ?

बृज : किया है, इधर आओ !

हरीश : वाह ! (अन्दर आकर) लगता है कि अन्धेरे में कैम्प लगा हुआ है। नहीं ?

बृज : हाँ ! शायद—तो तुम छुट्टी मना आए।······

हरीश : छुट्टी। खाक छुट्टी ! जब देखो बारिश। इतनी बारिश कि मैं घुटनों तक डूब जाता।

बृज : अच्छा, लो ड्रिंक लो और मुझे खुलासे से बताओ।

हरीश : हम ? यहाँ और कौन है ?

छाया : मैं हूं मिस्टर ग्रोवर !

हरीश : छाया ?

छाया : तुम तो जानते ही हो, मुझे अन्धेरे में कितना डर लगता है इसीलिए यहाँ पड़ी हूँ !

कर्नल : (लाइटर जलाते हुए) सब बर्बाद ! हम तो यहाँ हैं पर आप महाशय कौन हैं ?

बृज : आप मि० हरीश ग्रोवर, मेरे पड़ोसी और आप कर्नल मल्होत्रा !

हरीश : आपसे मिलकर खुशी हुई !

कर्नल : बहुत खुशी हुई !

बृज : और यह मिस कान्ति मल्होत्रा हैं।

कान्ति : हलो ?

बृज : लाओ, यह बरसाती मुझे दे दो हरीश। मैं रख देता हूं।

हरीश : ध्यान से। एकदम गीली है।

कर्नल : शायद आपके पास भी मोमबत्तियाँ नहीं होंगी ?

हरीश : आपने कैसे जान लिया, मेरे पास सचमुच नहीं हैं ?

(बृज कर्नल के पास आकर उसके लाइटर को फूंक मारकर बुझा देता है।

कर्नल : यह तुम क्या करते हो ?

बृज : मैं तो आपके लाइटर की बत्ती बचा रहा हूं। अभी तो इसे आपको काफी देर तक जरूरत पड़ सकती है और यह है कि जल्दी ही खत्म हो जाना चाहती है।

हरीश : यह ठीक है। मेरे पास माचिस है।

कान्ति : माचिस !

हरीश : हाँ, यह शायद सीधा ही पकड़े हुए हूं।

(एक जलाता है।)

(बृज जल्दी से उसे बुझा देता है और फर्नीचर को इधर-उधर से ढंकने का प्रयास करता है।)

छाया : यह क्या ?

बृज : इस कमरे में कोई तीली नहीं जल सकती। नामुमकिन।

यह पुराने मकान बड़े हवादार होते हैं। इस मकान की भी यही खासियत है—बड़ा हवादार है—क्रास वैन्टीलेशन !

हरीश : मुझे समझ में नहीं आ रहा, कि तुम कहना क्या चाहते हो ?

(फिर माचिस जलाता है।)

बृज फिर बुझा देता है। और चुपके-से कुर्सी में बैठ जाता है, लेकिन इस बार पकड़ा जाता है।)

क्या हुआ है तुम्हें ?

बृज : कुछ भी तो नहीं !

हरीश : यहाँ कोई लाश रखी हुई है···?

बृज : नहीं !

(खिसियानी हँसी)

हरीश : तो फिर बहुत पी गए हो ?

बृज : नहीं, बिल्कुल नहीं !

(हरीश फिर माचिस जलाता है। इस बार बृज धक्का मार के बुझा देता है।)

हरीश : बर्दाश्त की हद होती है। आखिर मुसीबत क्या है ?

बृज : बहुत बड़ा खतरा।

हरीश : क्या ?

बृज : खतरा ! यही खतरा ! नंगी लौ को जलाकर रखना बहुत बड़ा खतरा है। कोई भी दुर्घटना हो सकती है। हम सब मर सकते हैं।

हरीश : तुम घास तो नहीं चर आए ?

बृज : तुम मानो या न मानो, पर मुझे नंगी लौ से बहुत बड़ा

खतरा लगता है।

कान्ति : बृज बिल्कुल ठीक कहते हैं। मुझे भी खतरा लगता है।

बृज : अब समझे ! —बहुत बड़ा खतरा !

कर्नल : तब तुमने मुझे क्यों नहीं रोका बेबी ?

कान्ति : मैं—मैं भूल गयी थी।

कर्नल : ताज्जुब ?

छाया : हमें जरूर ऐहतियात बरतनी चाहिए।

बृज : बिल्कुल !

कान्ति : गुड। मि० ग्रोवर ! आप ड्रिंक्स लेना चाहेंगे ?

हरीश : उसमें तो कोई खतरा नहीं। हे भगवान, क्या जरनी थी। एक छोटा-सा डिब्बा और उसमें पैंतीस आदमी ! एक महिला ऐसी भी थी जिनके साथ बच्चे ! गोद में बच्चे और साथ में तीन झबरे कुत्ते। और इस पर तुर्रा यह कि सारे रास्ते में खाने के लिए ढंग की कोई भी चीज नहीं ! मुझे तो ऐसा लगने लगा है कि जैसे किसी ने मेरी पैन्ट उतारकर मुझे चौराहे में खड़ा कर दिया हो !

कान्ति : तुम क्या चाहते हो कि रेलवे वाले हर डिब्बे के साथ एक रेस्टराँ कार लगाएँ !

हरीश : मैं उन्हें जानता हूं ! इनको तो किराया मिल जाए, बस उसके बाद आप जाएँ भाड़ में !…मैं कपड़े बदल कर अभी आया !

बृज : यहीं बदल लो !

हरीश : वह तो ठीक है। पर मुझे सारा सामान खोलना है।

बृज : यह बाद में कर लेना।

हरीश : बिना जरूरत के कपड़े सूटकेस में ठूंसे रखना मुझे कतई पसन्द नहीं !

बृज : पर पाँच मिनट में क्या फर्क पड़ जाएगा ।

हरीश : तुम तो ऐसे कह रहे हो, जैसे मेरे बास हो !

कान्ति : आप क्या लेंगे । रम, जिन या रैड नाइट ?

हरीश : फिर से कहना ?

कान्ति : तेज रम, लाइट जिन या प्यारी रैड नाइट !

हरीश : लगता है आप भी इसी कैम्प में शामिल हैं । अगर आप कहती हैं तो मैं थोड़ी जिन ले लूंगा । लाइम के साथ ।

कर्नल : मि० बृज, क्या मुझे यह बार-बार याद करवाना पड़ेगा कि हम इमरजेंसी में फँसे हैं । और तुम्हारे मेहमान महोदय किसी भी वक्त टपक सकते हैं ।

बृज : या खुदा मैं तो भूल ही गया था ।

कर्नल : अपने आस-पास देखो, पड़ोसियों से पूछो । जहाँ चाहे ढूंढो, पर साली टार्च कहीं से भी पैदा करो !

बृज : हाँ···हाँ···! कान्ति ! मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं ।

कान्ति : मैं इधर हूं !

(कान्ति बृज के पास जाती है और वह उसे सीढ़ियों के पास ले जाता है ।)

कर्नल : अब क्या करें ?

बृज : मि० कर्नल, माफ करें जरा···

(कहते हुए कान्ति को पकड़े सीढ़ियों पर चढ़ जाता है ।)

छाया : मि० ग्रोवर ! यह बहुत ही खुशी का मौका है । आप अन्दाजा नहीं लगा सकते कि कौन आने वाले हैं ।

हरीश : कौन ?

छाया : अन्दाज लगाइये !

हरीश : प्रधानमन्त्री ?

छाया : ओह् मि० ग्रोवर, आप बड़े शरारती हैं।

(ऊपर)

बृज : हमें अब क्या करना है ?

कान्ति : मैं क्या जानूं ?

बृज : सोचो !

कान्ति : लेकिन···

बृज : सोचो !

(नीचे)

कर्नल : इस लड़के को कुछ महसूस होता है कि नहीं ?

हरीश : महसूस ? वह तो बिल्कुल कट्ठला है।

कर्नल : क्या है ?

हरीश : एक बत्तख। मैं इसे कई सालों से जानता हूं। जब से यहाँ आया है तभी से। हम दोनों एक-दूसरे से कुछ भी छिपा कर नहीं रखते। मैं तो आपको उसके बारे में सब कुछ बता सकता हूं।

कर्नल : सचमुच ?

हरीश : हाँ, हाँ, बिल्कुल सच। दरअसल वह एक बड़ा ही प्यारा लड़का है।

(ऊपर)

बृज : हरीश का सारा फर्नीचर हमें उसके कमरे में जैसे भी हो, रखना पड़ेगा।

कान्ति : अब !

बृज : मजबूरी है। जब तक यह काम नहीं हो जाता, समझ लो, मुझे टार्च भी नहीं मिलेगी।

कान्ति : पर इस हालत में यह सब कैसे हो सकता है।

बृज : यह तो करना ही होगा। अगर उसे हमारे किए का पता

चल गया तो वह तो पागल हो जाएगा ।

(नीचे)

हरीश : देखो छाया, परेशान नहीं करो । तुम्हीं बता दो कौन आ रहा है ?

छाया : अच्छा, चलो तुम्हें क्लू देती हूं । आने वाला आदमी बहुत अमीर है ।

हरीश : अमीर··· बहुत अमीर···अच्छा सोचने दो !

कर्नल : (जोर से) कान्ति !

(ऊपर)

कान्ति : (बृज से) तुम उसे यह क्यों नहीं कह देते कि तुमने सिर्फ मजाक किया था ।

बृज : तुम उसे जानती नहीं । वह यह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उसके इस खजाने को कोई हाथ भी लगाए । वह इन्हें अपने बच्चों की तरह से प्यार करता है । दिन में दो-दो बार साफ करता है, फिर देखता रहता है । उसे पता लगा तो वह तूफान खड़ा कर देगा । और फिर तुम्हें यह अच्छा लगेगा कि वह तुम्हारे डैडी के सामने मुझे चोर कहे ?

कान्ति : बिल्कुल नहीं ।

बृज : पर वह जरूर कहेगा । मैंने तो उसे देखा है । उसे दौरा-सा पड़ जाता है । चिल्लाने लगता है ।

कर्नल : बृज !

कान्ति : फिर क्या करें अब ?

हरीश : (कर्नल से) कोई फायदा नहीं । आपकी आवाज वहाँ तक नहीं पहुँचती ।

बृज : देखो, थोड़ी होशियारी से काम लेना होगा । तुम इन्हें

पिलाती रहो। बस वक्त गुजरता रहे। बाकी मुझ पर छोड़ दो। मैं अंधेरे में ही सारा सामान उसके कमरे में वापिस पहुंचा दूंगा।

कान्ति : यह नहीं चलेगा।

बृज : चलाना पड़ेगा।

कर्नल : बृज! (गुर्राते हुए)

बृज : आया सर! मैं जरा ढूंढ़ रहा था।

कर्नल : जो कहना है नीचे आकर कहो। यह लड़का बुरा मान रहा है।

बृज : (कान्ति से) मुझ पर भरोसा रखना प्रिय!

(दोनों चुम्बन करते हैं।)

कर्नल : मि० मेहता, जल्दी आओ, डबल से!

बृज : आया सर! आया सर!

(जल्दी में सीढ़ियों में गिर पड़ता है।)

मैं तो गया कर्नल साहब। फिर भी...

कर्नल : जल्दी करो!

बृज : कान्ति आप लोगों की खिदमत में हाजिर है। और अगर सेठ छदामी लाल आ जाएँ तो उन्हें हालात समझा दीजिए। मैं अभी आया।

हरीश : मैं भी चलूं तुम्हारे साथ?

बृज : नहीं, नहीं, तुम यहीं रुको! खाओ, पीओ, मौज करो... मेरा मतलब है, थक गए हो।...वह झबरे कुत्ते...थोड़ी-सी जिन और लाइम। बस आनन्द ही आनन्द। मैं बस गया और आया।

(बृज अन्धेरे में ही खामोशी से कुर्सी उठा ले जाता है।)

कान्ति : अब आप बताइए, क्या लेंगे ? मि० ग्रोवर के लिए यह रही जिन और डैडी मेरे ख्याल से आप रम लेंगे ।

कर्नल : यह सब तुम अन्धेरे में ही कर लोगी ?

कान्ति : मुझे रास्ते की पूरी पहचान है ।

(बृज कान्ति से टकराता है ।)

यह सब बहुत ही आसान है ।

हरीश : ओह देखो…लगी…ठहरो माचिस जलाता हूं । ज्यादा तो नहीं लगी ।…

एक मिनिट !

(जलाता है ।)

कान्ति : यह क्या ! फिर नंगी लौ…

(बृज हाथ में पकड़ी हुई कुर्सी रख कर तीली फूंक मार कर बुझा देता है ।)

मि० ग्रोवर, आप हम सबको खत्म कर देना चाहते हैं ? अगर ऐसा ही रहा तो सेठ छदामी लाल को हम नहीं, हमारी लाशों के टुकड़े-टुकड़े मिलेंगे । क्या मुसीबत है ।

(वह माचिस लेकर आइस-बाक्स में डाल देती है)

(बृज एक कुर्सी लेकर गायब हो जाता है ।)

हरीश : छदामी लाल ? यही सेठ छदामी लाल आ रहे हैं आज ?

छाया : हाँ, मि० मेहता का काम देखने आ रहे हैं । है न मजेदार बात ?

हरीश : मैं यह सोच भी नहीं सकता था ! पिछले सन्डे स्टैंडर्ड में ही उन पर एक आर्टिकल पढ़ा था । वह तो रहस्यमय करोड़पति के नाम से मशहूर हैं । वह बहरा भी है और अपना सारा दिन या तो अपनी इकटठी की हुई कला-

कृतियों के साथ बिताता है या फिर आर्ट गेलरी या प्राइ-वेट स्टूडियो देखने में। यही उसकी जिन्दगी है। काश ! मेरे पास भी पैसा होता तो मैं भी बढ़िया से बढ़िया कला-कृतियाँ घर पर ला कर रखता।

(बृज अपनी टूटी हुई कुर्सी लेकर लौटता है। दूसरी कुर्सी उठाना उसके लिए बहुत मुश्किल हो गया है।)

छाया : मैं तो आज तक किसी करोड़पति से नहीं मिली। मैं सोचा करती हूं कि वो हमसे कैसे अलग होते होंगे। मेरा मतलब है वो किसी खास धातु के बने होते होंगें।

कर्नल : खास धातु ?

(बृज हड़बड़ाहट में करीने से कुर्सी उठाने में सफल हो जाता है।)

छाया : मेरा मतलब है उनकी चमड़ी हमसे बड़ी मुलायम होती होगी। जैसे किसी छोटी लड़की की…

कान्ति : क्या मजेदार कल्पना है।

हरीश : मैं तो हमेशा कहता हूं, छाया वास्तव में जीनियस है। नई-नई कल्पना इनके बाएँ हाथ का खेल है।

छाया : आपकी दया से। हरीश बड़ा महान् है। तारीफ करने में जरा भी कोताही नहीं करता।

(छाया अपनी बात जारी रखती है और बृज दीवार के साथ टकराता है। कुर्सी छूट जाती है। फिर ढूंढता, सम्भालता है और थक-टूट कर ले जाता है इस बीच छाया बोलती रहती है। सभी पात्र सामान्य बातचीत होने का आभास देते हैं। जैसे कमरे में बृज उपस्थित है ही नहीं।)

पर मैंने सिर्फ कल्पना नहीं की है। हमारे जमाने में मुलायम चमड़ी सुरुचि का प्रतीक माना जाता था। पर आजकल—आजकल तो हम मध्यवर्ग के लोग कपड़े भी बढ़िया नहीं पहन सकते, मुलायमियत की तो बात ही छोड़िए। मैं जब छोटी थी, मेरे डैडी मुझसे कहा करते थे—'बेटे, मध्य वर्ग बुरी तरह से पिस रहा है। हमारी वुक्कत एक मरे हुए कुत्ते से ज्यादा नहीं है।' आज सोचती हूं कि मेरे डैडी कितने सच्चे थे।

कर्नल : क्या आपके पिता व्यवसायी आदमी थे ?

छाया : वह तो देवता थे !

कर्नल : ओह !

(बृज टूटी कुर्सी लेकर लौटता है।)

बेबी, ड्रिंक्स का क्या हुआ ?

कान्ति : बहुत अच्छे हैं। एक मिनिट, बस !

कर्नल : मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ !

(बृज कर्नल की कुर्सी के पास ही कुर्सी लगा देता है।)

कान्ति : यह लाइम आप चाहें तो मिस छाया को दे दें।

कर्नल : बहुत अच्छा !

कान्ति : डैडी, यह लीजिए मिस छाया के लिए कड़वा लाइम !

कर्नल : **(छाया को लाइम देते हुए)** हां, तो आपके डैडी मिनिस्टर थे !

छाया : मैंने कहा न कि वो देवता थे। मैं तो शुक्र करती हूं कि वे आज की जिन्दगी में आई उज्जडता और गंवारूपन देखने से पहले ही चल दिए।

हरीश : **(सोफे पर बैठते हुए)**···आप ठीक कहती हैं मिस

छाया। उज्जड़ता और गंवारूपन—ये दो बातें वाकई आज की ज़िन्दगी का हिस्सा बन गई हैं। कुछ लोगों के तौर-तरीके तो इतने खराब होते हैं कि विश्वास ही नहीं आता कि वे बीसवीं सदी के आदमी हैं। पिछले शुक्रवार को मेरी दुकान पर जो कुछ हुआ, मैंने बताया ? शायद नहीं बताया।

छाया : शायद नहीं ही बताया।

हरीश : क्या हुआ पिछले शुक्रवार। यही कोई पौने दस बजे होंगे। मैंने दुकान खोली और तुम तो जानती हो कि दिल्ली में कितनी आँधी चलती है। सारी दुकान में मिट्टी-ही-मिट्टी। सफाई करने से पहले ही वह तुम तो जानती ही हो, मिसेज लीला नायडू, वह भूरे बालों वाली, जिसे इस बात का बड़ा नाज है कि कुआंरे लड़कों को फँसाने के लिए खुदा ने उसे कोई वरदान दे रखा है।

कर्नल : यह आपका लाइम !

छाया : बहुत-बहुत शुक्रिया !

(पूरी बातचीत के दौरान छाया गिलास सहलाती रहती है, कर्नल पीता रहता है और बृज कुर्सियाँ बदलने में व्यस्त)

हरीश : उसके हाथ में एक फूलदान था, जो उसने पिछले हफ्ते मुझसे खरीदा था। दरअसल उसने यह फूलदान अपने वसन्त विहार वाले बूढ़े आशिक के लिए उसके जन्मदिन पर प्रेजेन्ट देने के लिए खरीदा था। आप तो जानती हैं कि मैं लोगों के चरित्र को उनकी चाल-ढाल से ही पहचान लेता हूं। वह यह सोच रही थी कि उस बुढ़ऊ से थोड़ा आँख-मटक्का करके उसके मरने के बाद उसकी सारी जायदाद की मालिक बन बैठेगी। छायाजी वह जिसके पीछे

पड़ जाती है, उसे पूरी तरह से निचोड़ कर छोड़ती है।

(**कर्नल की कुर्सी एक ओर खिसकने लगती है।**)

कर्नल : यह क्या बदतमीजी है !

कान्ति : डैडी, क्या हुआ ?

(**बृज चुपके-से बैठ जाता है।**)

कर्नल : यह तो एकदम टूटी हुई कुर्सी है। ऐसी कुर्सी पहले तो यहाँ नहीं थी।

(**बृज कुर्सी को पहले जैसा ही लगा देता है।**)

हरीश : है, अब निगरानी रखनी पड़ेगी। यह सब बड़ा लिजलिजा लगता है। मैंने बृज को कई बार समझाया है। खैर छोड़ो। हाँ तो वह फूलदान ! उस पर नारंगी रंग की जमीन और उस पर नीले और सफेद रंग में बड़ा बारीक काम हुआ था। बडा ही खूबसूरत ! मैंने उसे उसकी कीमत पाँच सौ रुपये बताई थी। इससे सस्ता उसे और कहीं मिल भी नहीं सकता था। लेकिन —

(**कर्नल पुनः बैठ जाता है।**)

वह लड़ने को तैयार। ऐंठ गयी। बाल ऐसे सैट करवा कर आयी थी कि अगर उसकी उम्र अपने से आधी और खूबसूरती अपने से दुगुनी होती तो शायद अच्छे लगते।

(**इसी बीच बृज की कुर्सी छाया को लगती है और वह कराह उठती है।**)

बिल्कुल आप समझ गयीं। मैं क्या कहना चाहता था और आप जानती हैं उसने मुझसे क्या कहा—'मि० ग्रोवर, आपने मेरे साथ धोखा किया है।'

छाया : नामुमकिन !

हरीश : 'धोखा' उसी का शब्द है।

(बृज एक मूर्ति के साथ टकराता है। मूर्ति हिलती है।)

इसे सम्भालो, मैं बात कर रहा हूं !

कान्ति : मुझे बेहद अफसोस है।

(तीनों एक-दूसरे को हैरान होकर देखते हैं।)

हरीश : कोई बात नहीं। हाँ तो जानती हो मिसेज नायडू ने फिर मुझसे क्या कहा ? कहने लगी कि जनपथ पर एक व्यापारी ने उसे बताया कि वह फूलदान चीनी का नहीं है। बल्कि उन्नीसवीं शताब्दी का कोई रद्दी इंगलिश फूलदान है।

(बृज कुर्सियां बदलने के चक्कर में)

मैंने उससे गुस्से में पूछा—क्या उसने ऐसा कहा, तो वह कहने लगी कि हाँ, यह फूलदान वापिस ले लो और मेरे पैसे लौटा दो !

छाया : कितनी बेहूदा बात। फिर तुमने क्या किया ?

हरीश : मैंने कहा कि पहली बात तो मुझे यह पसन्द नहीं कि मेरी दुकान से सामान खरीद कर कोई पूछताछ करता फिरे। मेरी ईमानदारी पर शक करे। दूसरी बात यह कि जिस व्यापारी को उसने वह फूलदान दिखाया था, वह चीनी सामान की अलिफ-बे नहीं जानता और यही बात मिसेज नायडू पर भी लागू होती है

छाया : तुमने ऐसा कहा ?

हरीश : बेशक कहा। और मैंने उसे यह भी बता दिया कि जो मग वह चीनी समझ कर खरीद लाई है, वह चीनी नहीं है। मैंने यह भी कहा कि आगे से कभी भी मेरी देहलीज

पर कदम नहीं रखिए और अगर आपने ऐसा किया तो उसके परिणाम का जिम्मेदार मैं नहीं होऊँगा।

कान्ति : मि० ग्रोवर, वाकई आप मजेदार आदमी हैं। यह आपके लिये जिन और लाइम !

हरीश : मैं बड़े गुस्से में था। मैंने कोई परवाह नहीं की।

कान्ति : डैडी ! आप कहाँ हैं ? यह आपके लिए रम !

कर्नल : इधर बेटी !

हरीश : साली बूढ़ी कुतिया—मुझे चीनी बर्तनों की समझ देने आयी थी। हूं ! !

छाया : कर्नल, आपको भी चीनी के सामान का शौक है ?

कर्नल : मुझे इसकी कोई समझ ही नहीं। हाँ, चीनी सामान अपने रंगों के कारण कभी-कभी मुझे पसन्द आ जाता है। जैसे उस मूर्ति पर पुते हुए हैं—बहुत कोमल !

हरीश : कहाँ है यह मूर्ति ?

कर्नल : वह जो पैकिंग केस पर। बहुत बढ़िया !

हरीश : मुझे मालूम नहीं था कि बृज के पास चीनी सामान भी है। किसकी है यह मूर्ति ?

(बृज फ्रीज)

कान्ति : हम सबके हाथ में जाम हैं। मेरा सुझाव है कि हम डैडी के मिलिटरी वाले अन्दाज में पियें !

छाया : मैं पिऊँगी !

हरीश : ठीक !

(पीते हैं मिलिटरी अन्दाज में)
इसी बीच बृज जल्दी में हरीश के रेनकोट में बुद्ध की मूर्ति छिपा लेता है। मेज पर रख देता है।)

कर्नल : थैंक्यू बेबी। तुम्हारा सुझाव बहुत अच्छा लगा। बहुत अच्छा, पर सत्यानाश, तुमने मुझे जिन दे दी।

हरीश : मुझे लाइम !

छाया : ओह, मुझे रम ! कितनी कड़वी ।

हरीश : (छाया से) आओ, हम बदल लें । पर नहीं, मुझे रम मिलेगी । मुझे जिन चाहिए !

कर्नल : यह लो !

हरीश : यह लो छाया ।

छाया : शुक्रिया !

हरीश : एक बार फिर ! बाटम्स अप !

(पीते हैं, कर्नल को कड़वी ज्यादा लगती है । वह थूकता है । बृज पर थूक पड़ती है, जो घुटनों के बल चला आ रहा है ।)

कर्नल : यह क्या, मैं अब अन्धेरे में एक मिनिट भी और नहीं ठहर सकता ।

(लाइटर जलाने की कोशिश)

कान्ति : डैडी, प्लीज !

कर्नल : मुझे कोई चिन्ता नहीं बेबी । अगर कोई धमाका होता है तो हो । क्या बदतमीजी··· (लाइटर जलाता है बृज को देखकर)

तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?

बृज : (लाइटर बुझाकर) जल्दबाजी नहीं करिये कर्नल । मिलिटरी आफिसर का सबसे बड़ा कर्तव्य होता है कि वह अपने आदमियों को फिजूल किसी खतरे में न डाले ।

कर्नल : गुस्ताखी न करो । टार्च कहाँ है ?

बृज : दुकान बन्द थी ।

हरीश : तुम दुकान पर गये ही नहीं । इतनी जल्दी तुम आ ही नहीं सकते !

बृज : मैं गया था !

छाया : पर दुकान पांच ब्लाक छोड़कर है मि० मेहता ।

बृज : जब शैतान काम करता है तो बड़ी तेजी से करता है । समझे !

छाया : क्या मतलब ?

बृज : आप जो चाहें समझ लें ।

(जल्दी से मेज कमरे से बाहर निकाल देता है ।)

कर्नल : देखो, इस कमरे में बड़ा अजीब कुछ हो रहा है । मि० मेहता ! मैं आर्ट के बारे में भले ही न जानता होऊँ, पर आदमियों को मैं खूब समझता हूं । रोशनी हो या अंधेरा, झूठे आदमी को मैं दोनों ही हालात में पहचान लेता हूं !

कान्ति : डैडी !

कर्नल : मैं तुम्हारी बात पर शक नहीं करता । लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम कसम खाकर कहो कि तुम दुकान पर गये थे ?

कान्ति : बृज, डैडी तुमसे बात कर रहे हैं !

कर्नल : तुम किस लिये चिल्ला रही हो ?

(बृज हरीश के कमरे से भाग कर आता है ।)

हालाँकि मैं जानता हूं कि वह ठीक कह रहा है, लेकिन फिर भी—हाँ तो, तुम्हारा क्या जवाब है ?

बृज : मैं···मैं आपसे सहमत नहीं हो सकता ।

कर्नल . क्या ?

बृज : आपने जो कहा, ठीक कहा । आदमी तो ऐसा सोच नहीं सकता । आप जानें, आप बहुत समझदार और तेज हैं, वाकई । फिर आप कृपा करने में कंजूस क्यों हैं ?

कर्नल : हूं, मेरा मजाक उड़ाते हो ?

बृज : अच्छा, तो मैं कुछ और उड़ाने की कोशिश करता हूं।

हरीश : कुछ मजा किरकिरा हो रहा है।

कान्ति : जाम हराम !

कर्नल : हूं, बेबी, जरा मुझे निबटने दो !

बृज : यहाँ निबटने के लिये है ही क्या ?

कर्नल : अगर तुम यह सोचते हो कि मैं अपनी बेटी की शादी तुम जैसे जन्म से झूठे आदमी के साथ करने जा रहा हूं, तो तुम बहुत भ्रम में हो।

हरीश : शादी !

कान्ति : हाँ, शादी !

हरीश : तुम और यह बृज ?

कान्ति : हाँ, बृज और मैं— सिर्फ डैडी की हाँ चाहिये !

हरीश : अच्छा !

बृज : दरअसल, हम इसे सिक्रेट रखे हुए थे।

हरीश : जाहिर है। कब से चल रहा है यह ?

बृज : चन्द महीनों से !

हरीश : बड़े बदमाश निकले।

बृज : तुम्हें पसन्द है न हरीश !

हरीश : इसके अलावा और क्या कह सकता हूँ। तुम बात को अपने तक रखना खूब जानते हो।

बृज : मैं तुम्हें बताना चाहता था · सच मानो सिर्फ तुम्हीं एक ऐसे आदमी थे जिसे मैं बताना चाहता था।

हरीश : फिर तुमने बताया क्यों नहीं ?

बृज : पता नहीं। बस कभी ऐसा जिक्र ही नहीं आया।

हरीश : तुम मुझसे रोज मिलते हो।

बृज : हाँ !

हरीश : तुम कभी भी जिक्र कर सकते थे।

बृज : यह भी ठीक है।

हरीश : (खीझ में) खैर, तुम जानो तुम्हारा काम। यह कतई जरूरी नहीं कि तुम अपने व्यक्तिगत मामलों में मुझे भी अपना भागीदार बनाओ। मैं हूं ही क्या। सिर्फ तीन साल से तुम्हारा पड़ोसी। पर मैं हमेशा सोचता था कि हम दोनों पड़ोसीपन को छोड़ कर एक-दूसरे के बहुत नजदीक हैं। मैं ही गलत साबित हुआ।

बृज : ओह हरीश ! खीझते क्यों हो !

हरीश : बिल्कुल नहीं खीज रहा। सिर्फ यही कह रहा हूँ कि यह जानकर एकदम हैरानी हुई और कुछ-कुछ निराशा भी।

बृज : हरीश, तुम समझते क्यों नहीं !

हरीश : मुझे समझाने की कोई जरूरत नहीं। आगे से ध्यान रखूँगा कि दोस्ती पर बहुत घमण्ड और भरोसा नहीं करना चाहिए। मैं वाकई बेवकूफ और घटिया हूं जो भरोसा किया।

कर्नल : माई गुड गाड !

कान्ति : मि० ग्रोवर ! सच मानिये, हमने अभी तक किसी को भी कुछ नहीं बताया !

कर्नल : बेबी, अब कुछ बताने को है भी नहीं।

बृज : मामला बहुत गड़बड़ा गया है सर। गलती मेरी ही है। मैं माफी माँगता हूँ।

छाया : मेरे पिता हमेशा कहा करते थे। इन्सान गलती करता है और उसे माफ करने वाला देवता होता है।

कान्ति : मेरा खयाल है यह किसी और ने कहा है।

छाया : हाँ, बहुत से लोगों ने इसे कापी किया है।

(छाया जिन की बोतल खोलकर सूंघती है।)

कान्त : मैं आपकी कुछ मदद करूँ !

बृज : जरूर !

(छाया लेती है।)

कर्नल : हाँ तो, आप जहाँ भी हों—

बृज : मैं यहाँ हूं !

कर्नल : इस बार तो मैं तुम्हारे भद्दे व्यवहार को नजरअन्दाज किए देता हूँ। पर आइन्दा ध्यान रहे। मुझे बेटी बहुत प्यारी है और मैं चाहता हूँ कि शादी से पहले मैं यह जान लूं कि तुम उसकी देखभाल अच्छी तरह से कर सकते हो। इसके बाद ही मैं कोई फैसला कर सकता हूँ। मैंने कुछ गलत कहा।

बृज : नहीं सर, बिल्कुल ठीक !

कान्ति : डैडी, आप फिक्र न करें। यह मेरी देखभाल अच्छी तरह से कर सकते हैं। कला की दुनिया में जल्दी ही इनका नाम ऊँचा होगा और मैं एक बड़े कलाकार की बीवी कहलाऊँगी। जैसे श्रीमती बैनर्जी !

हरीश : उनकी कोई पत्नी नहीं थी।

कान्ति : क्या ?

हरीश : हाँ ! वह बिल्कुल अलग किस्म का आदमी था।

कान्ति : सच, मैं यह सब नहीं जानती थी !

बृज : हरीश, तुम्हें कुछ बुरा लगा हो तो हम उसके लिए माफी माँगते हैं।

हरीश : नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।

बृज : पर मुझे लगता है मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है। उसके लिए माफी चाहता हूँ।

कान्ति : मि० ग्रोवर ! कर दीजिए न। लड़ना अच्छा नहीं है। मुझे तो लगता है कि हम लोगों की दोस्ती दिन-ब-दिन पक्की होगी।

हरीश : मैं एक विश्वासघाती के साथ दोस्ती की कल्पना भी नहीं कर सकता।

छाया : क्या…

कर्नल : यह तो आपने थोड़ी देर पहले भी कहा था।

(शालू काला चश्मा चढ़ाये आती है। अंधेरा देखकर ठिठकती है। चश्मा उतार देती है, पर इससे अंधेरे में कोई फर्क नहीं पड़ता।)

छाया : मैंने कहा था ?

कान्ति : बृज विश्वासघाती नहीं है। यह कलाकार है और कलाकार कला की दुनिया में खोकर कुछ भी भूल सकता है। क्यों बृज ?

बृज : हाँ।

(कान्ति का चुम्बन का स्वर। बृज प्रतिवादन करता है। शालू हैरान)

कान्ति : छोड़ो हरीश, क्षमा करो और भूल जाओ।

हरीश : यह हकीकत है ?

कान्ति : एक जिन और लाइम और लो। मैं भी लूंगी।

(वह मिलाने लगती है।)

हरीश : मैं बनाऊँ।

कान्ति : नहीं मैं बनाती हूं।

हरीश : एक खूबसूरत लड़की के साथ शराब पीने से बढ़िया बात और कोई नहीं हो सकती।

कान्ति : आपने अभी देखा ही क्या है ?

हरीश : मौका मिला है। औरतों के मामले में बृज की पसन्द का जवाब नहीं। मैं आम तौर पर कहा भी करता हूँ कि औरतों की पसन्द इसकी उतनी ही ऊँची है, जितनी मेरी चीनी सामान के मामले में।

(हरीश और बृज सोफे के दोनों सिरे पर बैठते हैं। बीच में शालू, लेकिन अंधेरे में बृज शालू को हरीश समझ कर बातें करता है।)

बृज : हरीश।

कान्ति : घबराते क्यों हो बृज। मैंने सिर्फ एक ही फोटोग्राफ देखा है, वही जो दो साल पहले मिली थी। साड़ी और ब्लाउज में वह बड़ी सुन्दर लग रही थी।

हरीश : कौन, मेरा खयाल है आप शालू के बारे में कह रही हैं।

कान्ति : आप उसे जानते थे ?

हरीश : हाँ-हाँ, वह इधर काफी अरसा तक आती रही है।

(बृज शालू को हरीश समझ कर चुटकी लेता है। वह उछलती है। शालू हरीश को धक्का देती है।)

कान्ति : अच्छा ! ! सच ?

हरीश : हाँ, हाँ पर कहीं मैं बिना बारी के तो नहीं बोल रहा ?

बृज : नहीं, बिल्कुल नहीं। वैसे मैंने शालू के बारे में कान्ति को सब कुछ बता दिया है। मुझे हैरानी होती है हरीश कि तुम तीन महीने को एक लम्बा अरसा बता रहे हो।

कान्ति : कैसी थी वह ?

बृज : (शालू के कान में) मेरा खयाल है हरीश, कि तुम उसी

मुश्किल से याद कर पाओगे ।

हरीश : (दूसरे कोने से) मैं क्यों करूँ ?

बृज : अच्छा-अच्छा, दो साल हो गये हैं इसलिये तुम भूल गए हो ।

हरीश : दो साल ?

बृज : दो साल पहले !

(वह शालू को इतनी जोर से चुटकी काटता है कि वह हरीश को सोफे से नीचे गिरा देती है ।)

हरीश : (उठते हुए) अब तुमने उसका जिक्र कर ही दिया है तो मैं बता दूं कि वह ऐसी लड़की नहीं थी, जिसे कोई जल्दी से भूल जाए !

कान्ति : खूबसूरत थी ?

हरीश : नहीं एकदम साधारण !

बृज : गलत ।

हरीश : मैं अपनी राय दे रहा हूँ ।

बृज : इससे पहले तुमने कभी अपनी राय नहीं दी ।

हरीश : (शालू की ओर झुककर) मुझसे कभी पूछा ही नहीं गया। पर अब जब बात हो ही रही है तो मैं बता दूं कि वह मुझे हमेशा भद्दी लगी । खास तौर पर उसके पीले, नुकीले खूंटे जैसे दाँत । और दूसरे उसकी चमड़ी भी बड़ी खराब थी ।

बृज : ऐसा कुछ नहीं था ।

हरीश : ऐसा था । मुझे अच्छी तरह से याद है। ऐसा लगता था जैसे दीवार पर गिरते हुए स्लेटी रंग के कागज पर किसी ने गुलाबी रंग का कागज चढ़ा दिया हो ।

छाया : बिल्कुल ठीक । मैंने उसे बहुत बार देखा ,तो नहीं । पर

उसकी चमड़ी मुझे अच्छी तरह से याद है। अजीब-सा रंग था उसका और बड़ी खुरदरी···मुलायम नहीं थी—जैसी कि आम जवान लड़कियों की होती है।

(शालू गुस्से में खड़ी हो जाती है।)

हरीश : बिल्कुल ठीक। खुरदरी।

छाया : सूजी हुई सी भी।

हरीश : बहुत सूजी हुई।

बृज : तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

हरीश : तुम जानते हो मैंने उसे कभी पसन्द नहीं किया। वह अपने-आपको बहुत चालाक समझती थी।

छाया : बिल्कुल कजरी थी।

कान्ति : लगता है बड़ी चालबाज थी ?

शालू : (जो अभी तक खामोश थी, बोलती है।) [शर्त रही, वह थी। उस साड़ी-ब्लाउज वाले फोटोग्राफ में, वह किसी थर्ड रेट कम्पनी का इश्तिहार लग रही थी।

(सब जोर से हँसते हैं। बृज ज्यादा जोर से। शालू उसे थप्पड़ मारती है।)

बृज : आह।

कान्ति : क्या हुआ ?

छाया : मि० मेहता, क्या हुआ ?

बृज : (गुस्से में) यह क्या मजाक है हरीश। तुम्हें हुआ क्या है ?

(शालू बीच में से निकल कर एक ओर खड़ी हो जाती है।)

हरीश : (आवेश में) मुझे ?

बृज : और क्या कर्नल साहब को ?

कर्नल : क्या कर्नल साहब को···?

(बृज अंधेरे में भटकता हुआ नीचे से शालू को पकड़ कर एकदम पहचान लेता है।)

बृज : (भय में) शालू !!

(अंधेरे में वह छूट जाती है। वह ढूंढता है। वह बचती है।)

कर्नल : क्या ?

बृज : मैं उसे याद कर रहा था सर। दरअसल आप सब उसके बारे में गलत और निकम्मी बातें कर रहे थे। वह बहुत खूबसूरत थी।···और फिर हरीश ! तुमने भी तो अभी कहा था कि औरतों की पसन्द के मामले में मेरा जवाब नहीं !

हरीश : भूल-चूक भी तो हो जाती है।

बृज : (घूमते हुए) बकवास ! वह एकदम खूबसूरत थी, कोमल थी, विचारशील थी, दयालु थी, सच्ची दोस्त थी, समझदार थी—होशियार थी। हर तरह से प्यार करने लायक थी।

कान्ति : तुमने तो कहा था कि वह स्टील-ब्लेड जैसी थी।

बृज : मैंने कहा था ? हो ही नहीं सकता। नहीं, जो मैंने कहा था वह कुछ और था···बिल्कुल कुछ और···एकदम कुछ और। एकदम अलग। ऐसे जैसे चाक और पनीर। तुम जब सोचती हो पनीर···तो क्या वह चाक से अलग नहीं होता ?···

कर्नल : तुम जानते हो क्या कह रहे हो ?

कान्ति : इसी कमरे में जब मैंने तुमसे उसके बारे में पूछा था तो

तुमने बताया था कि वह पेन्टर है । बड़ी ईमानदार । बड़ी चालाक और इतनी नर्म जैसे…

बृज : जैसे स्टील ब्लेड ! चलो मैंने ऐसा कहा, तो क्या हुआ ?

कान्ति : कुछ नहीं हुआ ।

(बृज आवेश में शालू के साथ टकराता है ।)

कर्नल : मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा ।

कान्ति : अचानक वह इतनी नाजुक और मुलायम कैसे हो गयी !

बृज : (शालू को पकड़ते हुए) वह होती थी । अवसर पर । बहुत ज्यादा !

कान्ति : मेरे खयाल में ऐसे अवसर दुर्लभ होते होंगे ।

बृज : बहुत दुर्लभ नहीं ।

(शालू को चूमता है ।)

बिल्कुल दुर्लभ नहीं !

कान्ति : तुम कहना क्या चाहते हो ?… बृज ! मैं तुमसे बात कर रही हूं ।

बृज : (शालू के कान में) मैं इसे अभी समझाता हूं । तुम ऊपर बैडरूम में मेरा इन्तजार करो !

हरीश : (जो सोचता है कि बृज ने यह बात उससे कही है ।) अब ? यह कोई वक्त है वहाँ जाने का ?

बृज : हे भगवान् ! मैं तुमसे बात नहीं कर रहा था ।

कान्ति : क्या कहा तुमने ?

हरीश : (कान्ति से) मेरा खयाल है कि यह तुम्हें ऊपर भेज रहा है । कारण क्या हो सकता है, मैं नहीं जानता !

कर्नल : लगता है अभी इन्होंने कोई और प्लान बनाना है ।

छाया : क्या प्रेमी कुछ बात करना चाहते हैं ।

कर्नल : बहुत बुरी बात ।

(बृज शालू को सीढ़ियों पर धकेलता है।)

छाया : मेरे डैडी कहा करते थे, दो प्रेमी बैठे हों तो एक घण्टा मिनट में गुजर जाता है।

कर्नल : लगता है आपके डैडी मौलिक प्रतिभा वाले आदमी थे।

(कान्ति भी सीढ़ियों पर बृज को धकेलती है और बृज शालू को)

कान्ति : तुम्हारे आगे क्या है बृज जो तुम्हें बढ़ने नहीं देता। कुछ गड़बड़ है क्या ?

बृज : कुछ नहीं। मेरी पीठ—सोफा है, मैंने उसे ढंक दिया है।

कान्ति : तो हम लाइट जला लें।

बृज : हां···नहीं !

कान्ति : क्यों नहीं ?

बृज : बुरा नहीं मानना !

कान्ति : तुम मुझे बैडरूम में क्यों बुला रहे थे ?

बृज : मैं नहीं। जाओ।

कान्ति : क्या बात है।

बृज : मेरा मतलब यह नहीं था !

कर्नल : तुम वहाँ जरूर प्लान बना रहे होगे। क्या बकवास लगा रखी है वहाँ ?

बृज : कुछ नहीं कर्नल। दरअसल मुझे याद आया कि मेरे बैड के नीचे एक टार्च है। मैं वो चोरों को चुंधियाने के लिए रखता हूं। आप एक पैग और लीजिए।

(शालू को बैडरूम में धकेल कर दरवाजा बन्द कर देता है।)

कर्नल : एक और से तुम्हारा क्या मतलब। अभी तो मैंने एक भी नहीं लिया।

छाया : बेचारा कर्नल ! लाइए मैं आपको देती हूं।

कर्नल : मैं खुद ले लूंगा। लाइए आपको लाइम दे दूं।

छाया : शुक्रिया, मैं भी खुद ले लूंगी।

(दोनों अन्धेरे में मेज ढूंढते हैं। ऊपर बृज और शालू बैडरूम में)

शालू : तो यह बदमाशी है। यह सब क्या हो रहा है ?

बृज : कुछ नहीं। बस, सेठ छदामी लाल मेरी कला देखने के लिए आ रहे हैं और हमारा मेन फ्यूज उड़ गया है।

शालू : मुझे चोरी-छिपे जकड़ कर यहां लाने का यही कारण है ?

बृज : देखो, इस वक्त सारी स्थिति समझाना मेरे लिए बहुत मुश्किल है।

शालू : वो कौन है—चुड़ैल ?

बृज : दोस्त है।

शालू : मुझे दोस्त से कुछ ज्यादा और लगती है।

बृज : अगर तुम जानना ही चाहती हो तो यह कान्ति है और इसके बारे में मैं तुम्हें बता ही चुका हूं।

शालू : मूर्ख, लम्पट ?

बृज : वो बड़ी प्यारी लड़की है। दरअसल पिछले छः हफ्तों में हम बहुत अच्छे दोस्त बन गए हैं।

शालू : कितने अच्छे ?

बृज : सिर्फ अच्छे !

शालू : और उसके बाप के भी दोस्त बन गए होंगे ?

बृज : तुम पूछना ही चाहती हो तो बता दूं, ये लोग सिर्फ सेठ छदामी लाल से मिलने के लिए रुके हुए हैं।

शालू : तुम रात को फोन पर क्या बताना चाहते थे ?

बृज : कुछ नहीं।

शालू : तुम झूठ बोल रहे हो ।

बृज : बड़ी पूछताछ कर रही हो । सुनो शालू, अगर तुमने मुझसे कभी भी प्यार किया है तो इस वक्त यहाँ से चुपचाप चली जाओ । बाद में मैं तुम्हें सब कुछ बतादूंगा । यह मेरा वायदा है ।

शालू : मुझे तुम पर कोई भरोसा नहीं ।

बृज : प्लीज शालू···प्लीज···मान जाओ···प्लीज···

(दोनों आवेश में चुम्बन करते हैं ।)

(नीचे)

कर्नल : व्हिस्की मिल ही गई···आपको लाइम मिला कि नहीं ।

छाया : मिला । शुक्रिया कर्नल !

कर्नल : यह सेठ छदामीलाल आ भी रहे हैं कि नहीं । आधा घण्टा तो लेट हो ही चुके हैं ।

हरीश : यह कोई खास बात नहीं कर्नल ! करोड़पति का ने आना बहुत जरूरी होता है ।

छाया : बिल्कुल ठीक ! मैं भी ऐसी कल्पना करती हूं । करोड़-पति वो जिसके रेशम जैसे हाथ हों और जो दो घण्टा लेट आए !

कान्ति : बृज को ऊपर गए काफी देर हो गयी है । वो वहाँ क्या कर रहा है !

हरीश : हो सकता है उसने शालू को अपने बैडरूम में छिपा रखा हो और वहाँ उससे गपशप कर रहा हो !

कान्ति : क्या इमेजीनेशन है ।

(ऊपर)

कान्ति : तुमसे बढ़िया चुम्बन इस दुनिया में और कोई नहीं कर सकता ।

शालू : बृज तुम्हारा अभाव इतना सालता रहा कि तुम्हें देखने के

लिए मुझे यहाँ आना पड़ा। पिछले छः हफ्तों में जो कुछ भी सोचा, उसका सम्बन्ध तुमसे था और आज यहाँ आकर मैं यह महसूस कर रही हूं कि मैंने यहाँ से जाकर बहुत बड़ी गलती की।

बृज : शालू —प्लीज !

शालू : मेरा मतलब है—हम एक-दूसरे को पिछले चार सालों से जानते हैं और हम एक-दूसरे को एक पुराने अखबार की तरह से फेंक नहीं सकते।

बृज : क्यों नहीं। तुम मुझे अच्छी तरह से जानती हो। मेरे खयालों से भी वाकिफ हो !

शालू : तुम्हारे कलर सप्लीमेंट का क्या हुआ ?

बृज : इस वक्त हम ये बातें नहीं कर सकते। क्या तुम एक घण्टे तक मुझ पर विश्वास नहीं रख सकतीं।

शालू : क्यों नहीं। तुम यही चाहते हो न कि मैं नीचे न आऊँ।

बृज : हाँ !

शालू : ठीक है। तुम जाओ। मैं आराम से यहाँ लेटती हूं ! जब उनसे छुटकारा मिल जाए तो यहाँ चले आना।

बृज : और मुसीबत।

शालू : बिलकुल नहीं। उनके जाने के बाद हम दोनों आराम से लेटेंगे।

बृज : (बिस्तर पर गिरता हुआ) मैं बिल्कुल आराम से लेटा हूं !

(नीचे से)

कान्ति : बृज !

(ऊपर)

शालू : न रातों को आऊँ न दिन को पुकारूँ।
न रोशन करूँ मैं तुम्हारा अन्धेरा।
प्रिय तुम बताओ, तुम्हें कब निहारूँ।

बृज : अभी नहीं।

शालू : तब कब ?

बृज : बाद में !

शालू : चलो यूँ ही सही। बाद में बता देना—बिस्तर में !

बृज : आज रात को नहीं !

शालू : आज ही रात को—या फिर तुम्हारे गन्दे रहस्य का भेद पाने मैं नीचे आती हूं।

बृज : ऐसा कोई रहस्य नहीं है।

शालू : वो मैं नीचे जाकर खुद जान लूंगी। बुरा न मानो तो…

कान्ति-कर्नल : बृज !!!

बृज : हे खुदा !! ठीक है, यहीं रहो। पर खामोश रहना… साली, ! कुतिया !! ब्लैकमेल !!!

(सीढ़ियों पर)

हाय कान्ति, क्या है ?

कान्ति : इतनी देर से ऊपर क्या कर रहे हो। तुम्हारा यहीं रहना बहुत जरूरी है।

बृज : मैं बाथरूम में ढूंढ रहा था…टार्च…

कर्नल : तुम मुझे पागल बना रहे हो या मुझे गुस्सा दिला रहे हो !

बृज : बिल्कुल नहीं सर !

कर्नल : मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं मि० मेहता कि गुस्सा होना मेरे मुश्किल नहीं है। अपने दिनों में पूरी रेजीमेंट में मैं अपने गुस्से के लिए मशहूर था और जवान थर-थर कांपते थे। सुना तुमने ?

(ऊपर बृज से)

शालू : मैं गाना तो गा सकती हूं।

(बाथरूम चली जाती है।)

बृज : मैं तुम्हारे दांत तोड़ दूंगा !

कर्नल : क्या कहा तुमने ?

कान्ति : बृज, डैडी के साथ ऐसी बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ?

बृज : नहीं, नहीं, मैं डैडी को ऐसा नहीं कह रहा था !

कान्ति : फिर किससे कह रहे थे ?

बृज : मैं खुद से कह रहा था। मैं कह रहा था कि अगर मैं अंधेरे में ऐसे ही भटकता रहा तो मेरे दांत टूट जाएँगे।

कर्नल : पाजी ! बेवकूफ ! पागल ! यही सफाई देनी थी तुम्हें। तुम्हारा दिमाग घास चरने गया है।

कान्ति : बृज, ऊपर कुछ हो रहा है और मैं देखने के लिए खुद ऊपर जा रही हूं !

बृज : कान्ति ! नहीं !

कान्ति : मैं ऐसी बेवकूफ नहीं हूं, जैसा तुमने मुझे समझ रखा है। मैं समझती हूं कि कब तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो। तुम्हारी आवाज से धोखे की बू आने लगती है।

बृज : कान्ति, प्लीज, ऐसा करना औरत को शोभा नहीं देता। मेरा खयाल है कर्नल साहब भी मेरी बात मानेंगे कि एक आदमी के बेडरूम में अन्धेरे में एक औरत का जाना कितना शर्मनाक हो सकता है।

(बिजली कर्मचारी शिवपूजन का प्रवेश। उसने डी०इ०एस०यू० की वर्दी पहनी हुई है, ऊपर ओवरकोट, हाथ में टूल-बैग)

कान्ति : मैं ऊपर आ रही हूं !

बृज : मैं नीचे आ रहा हूं। हम सब एक-एक पैग लेंगे।

शिव : राम-राम जी। मेहता साहब ! मेहता साहब !! जैसा इन्तजाम किया था, वैसा आ गया।

बृज : या खुदा···सेठ छदामीलाल !

कान्ति : सेठ छदामीलाल ?

बृज : हाँ, सेठ छदामीलाल।

(बची हुई सीढ़ियों से कान्ति को उतार लाता है।)

शिव : आप लोगों ने तो सोचा होगा, मैं न आऊँ !

(ओवरकोट और टोपी उतार देता है।)

बृज : बिल्कुल नहीं । मुझे खुशी है कि आपने कुछ वक्त निकाला। मैं जानता हूं कि आप बहुत व्यस्त आदमी हैं। इधर हमारे यहाँ दुर्घटना यह हुई कि फ्यूज उड़ गया।

हरीश : आप सबको जरा जोर से बोलना होगा। बहुत ऊँचा सुनते हैं यह।

बृज : (जोर से) फ्यूज उड़ गया है। मूर्तियाँ देखने के लिए यह कोई अच्छे हालात नहीं हैं।

शिव : चिन्ता की कोई बात नहीं ! यह लो !

(जेब से टार्च निकाल कर जलाता है। स्टेज पर धीमा प्रकाश)

शिव कोट और टूलबैग हरीश की कुर्सी पर रख देता है जिससे बैग और कुर्सी छिप जाते हैं।)

कान्ति : कितना सुखद !

बृज : (जल्दी से सोफा पोंछते हुए) आप हमेशा टार्च साथ लेकर ही चलते हैं !

शिव : ज्यादातर। इससे चीजें जरा खुलासे में दिखती हैं। आप सब कोई आपस की बात कर रहे हैं।

छाया : नहीं, मैं तो जा रही थी। मैं आपके ध्यान को बँटाना नहीं चाहती।

शिव : मेरे लिए मत जाइए। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।

छाया : अच्छा !

बृज : (कान में) आपको कर्नल मलहोत्रा से मिलवाऊँ ?

कर्नल : (दूसरे कान में) मेरे लिए आदर की बात है।

शिव : नहीं, नहीं, मेरे लिए—!

बृज : मिस कान्ति मलहोत्रा !

कान्ति : (शिव के कान में) मेरी नमस्ते। आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। आपने इतनी दिलचस्पी दिखाई।

शिव : बिल्कुल नहीं।

बृज : हरीश ग्रोवर, मेरे पड़ोसी।

हरीश : हाउ डू यू डू ?

शिव : खुश।

हरीश : (चीखकर) आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।

बृज : एक और पड़ोसी मिस छाया।

शिव : खुश !

छाया : (शिव का हाथ पकड़े हुए) हम सभी यहाँ मुसीबत में फंसे हैं।

(हाथ को देखते हुए)

वाह, बिल्कुल सच। जैसा मैंने सोचा था, उससे भी बहुत--बहुत ज्यादा मुलायम !

बृज : मिस छाया, प्लीज !

शिव : आप सब चिल्ला कर क्यूं बोल रहे हैं। मैं बहरा नहीं हूं।

बृज : (हरीश से) तुमने तो कहा था ?

हरीश : मैंने कहीं पढ़ा था।

छाया : मेरे डैडी थे···बहरे।

(ऊपर शालू बृज का पाजामा-कुर्ता पहने कमरे में आती है और बिस्तर में घुस जाती है।)

शिव : देखिए, मेरे पास वक्त बहुत कम है। मुझे बताइए, कहाँ जाना है ?

बृज : स्टूडियो में। कान्ति, इनकी टार्च लेकर इन्हें स्टूडियो में ले जाओ।

कान्ति : क्या···?

बृज : (कान में) सोफा ! इसे भी तो बाहर करना है।

कान्ति : हाँ···हाँ !!

शिव : (मूर्ति को देखकर) कितनी बढ़िया। ऐसी मैंने पहले कभी नहीं देखी।

बृज : यह तो मेरी कला का एक छोटा-सा नमूना है, जिसे मैंने यहाँ रख छोड़ा है।

शिव : बड़ी ही खूबसूरत है।

बृज : आप वाकई ऐसा सोचते हैं ?

शिव : और क्या···

बृज : अच्छा, तो फिर आप मेरी दूसरी मूर्तियाँ देखिए। कान्ति आपको स्टूडियो ले जाएगी।

(छाया सोफे पर बैठती है। उसने अब तक काफी पी ली है।)

शिव : एक बार में एक ही। सब एक ही बार देखूंगा, तो मुझे बदहजमी हो जाएगी।

बृज : कोई बात नहीं—आप एक-एक ही देखिए। कोई जल्दी नहीं—पर आप इसे अन्धेरे में क्यों नहीं हजम करते।

शिव : क्या कहा आपने ?

बृज : आप विश्वास नहीं करेंगे सर। लेकिन यह मूर्ति मैंने इसीलिए बनाई है कि आप अन्धेरे में इसे एपरीशियेट करें। आप तो जानते ही हैं विक्टोरियन्स कहा करते थे बच्चे सुनने के नहीं, देखने के पात्र हैं। मेरा भी एक सूत्र है कला देखने की नहीं, महसूस करने की चीज है।

शिव : बहुत बढ़िया।

बृज : है न ठीक बात ? यह मेरी अपनी थिअरी है। मैं इसे 'तथ्यात्मक स्पर्शता' का सिद्धान्त कहता हूं। आप यह टार्च मुझे दे दीजिए और फिर खुद अनुभव करके देखिए।

शिव : ठीक है।

(बृज को टार्च देता है।)

बृज : शुक्रिया।

(वह टार्च बुझा देता है और छाया सोफे पर लेट जाती है।)

अब आप मूर्ति को अपनी बाँहों में भर लीजिए और महसूस कीजिए।

(स्टूडियो की ओर जाता है।)

अनुभव के इन क्षणों का अधिक से अधिक आनन्द उठाइए।

(शिव करता है।)

आप मेरी बात समझ गए न ?

शिव : हैरानगी है !...बिल्कुल विश्वास नहीं होता। बिल्कुल सच कहा। ऐसे तो यह और भी बढ़िया लगती। हाँ... मास्टरपीस।

बृज : (आश्चर्य से) लगता है ?

शिव : बिल्कुल इस आदमी दो के सुइयां लगी हैं न। एक खुद को प्यार करने की निशानी है और दूसरी घृणा की। पर दोनों का एक ही मतलब है। इस मूर्ति का यह ही मतलब है न।

बृज : बिल्कुल यही !···

शिव : मेरी टार्च लाओ। मैं इसे कोई नाम दूंगा।

बृज : टार्च ?···

शिव : हाँ, हाँ, मेरी टार्च !

बृज : ओह—हाँ···हाँ, यह लीजिए।

शिव : मैं इसे 'कालिदास' की आत्मा कहूंगा, क्योंकि जो बात कालिदास में थी, वह बाल्मीकि, तुलसी या सूरदास में नहीं थी।

बृज : यह मैं नहीं जानता···आप बहुत योग्य हैं।

शिव : वो तो है।

बृज : अन्धेरे में ही इतना सब महसूस कर लेना। इसे कहते हैं कद्रदान। रोशनी में इन प्रतीकों का अर्थ कोई भी निकाल सकता है। लेकिन अन्धेरे में···वाह···आपने मेरा आशय समझ लिया, इस मूर्ति को अर्थ दे दिया—इसे कहते हैं 'तथ्यात्मक स्पर्शता' का सिद्धान्त। आप महान हैं।

शिव : यह क्या चक्कर है महाशय !

(बृज छाया समेत सोफे को स्टूडियो में ले जाता है। छाया मदहोशी की हालत में गुडबाई करती है। फिर सोफा कमरे से बाहर निकाल देता है।)

बृज : कौन जानता है ? हो सकता है, आप ही मेरे नवीनतम

सिद्धान्त 'तथ्यात्मक स्पर्शता' को समझ सकें। उसका सही मूल्यांकन करें।

शिव : क्यों नहीं ?...आप जीनियस कलाकार हैं और मैं जीनियस आलोचक हूं। हम दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आपके तर्क मैं ही समझ सकता हूं।

(मूर्ति को फिर बाँहों में लेकर)

कितनी पीड़ा, वेदना...आह वेदना मिली विदाई...दुःख और दबाव—बिल्कुल अपने वक्त का। कितनी साधारण लेकिन असाधारण ! कितनी बढ़िया—पर कितनी सच्ची ! इससे भी बढ़कर एकदम नैतिक। माडर्न कला के कितने कलाकार हैं ऐसे जो ऐसी कला का सृजन कर सकें।

कान्ति : कोई भी नहीं।

शिव : कहीं मैं भाषण तो नहीं दे रहा। मुझमें यही खराबी है।

कान्ति : क्या कहते हैं आप। आपकी बातें तो इतनी अच्छी हैं, कि मैं सारी रात सुन सकती हूं।

हरीश : हाँ, कुछ सोचने का मसाला है।

कर्नल : मैं यह सब कुछ जानता तो नहीं, पर आपको सुनना गौरव की बात समझता हूं।

(कर्नल सोफा ढूंढता है। उसी वक्त बृज स्टूडियो से निकल कर पर्दा कर देता है। पैकिंग केस को सोफे के स्थान पर रख देता है। कर्नल उसी पर बैठ जाता है। कर्नल के नीचे बृज का हाथ दब जाता है, वह लगातार हाथ निकालने की कोशिश में)

हरीश : आपका मतलब है कि आपने इस धातु में यह सब

लिया ।

शिव : क्या मतलब । धातु ! इस धातु में जादू है । आप मेरा विचार जानना चाहते थे न । मैं तो कहूंगा कि यह लड़का जीनियस है । गागर में सागर है ।

कान्ति : वाह !

शिव : मेहता साहब, ऐसी कलाकृति की कीमत आपको बहुत लेनी चाहिए । वैसे इसकी क्या कीमत होगी ?

बृज : पाँच सौ…

कान्ति : पाँच हजार…

शिव : बहुत सस्ती । बहुत सस्ती है ।

हरीश : सस्ती !

कान्ति : मेरे ख्याल में भी यह कोई सस्ती नहीं । हम इतने में ही दे देंगे । तो आप लेंगे ?

शिव : मैं ?

बृज : कान्ति, तुम बहुत जल्दी कर रही हो । आप मेरी दूसरी कृतियाँ भी तो देखेंगे ।

शिव : देखिए, मेरे पास और वक्त नहीं है । हालांकि मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है, पर काम भी तो करना है ।

बृज : अच्छा !

कर्नल : अच्छा…

हरीश : अच्छा…

कान्ति : अच्छा, तो आपको यह पसन्द है न ?

शिव : बहुत पसन्द है ।

कर्नल : (उठते हुए, बृज हाथ छुड़ा लेता है ।) पाँच हजार में !

शिव : बिल्कुल—काश मेरे पास होते !

हरीश : सण्डे स्टैन्डर्ड के मुताबिक आप लगभग ७० करोड़ के आदमी हैं ।

शिव : यह अखबार वाले बड़ी बदमाशी करते हैं। इनकी खबरें अमूमन गलत होती हैं। बैंक पासबुक के मुताबिक मेरे खाते में २२२ रुपये २२ पैसे हैं।

हरीश : क्या आप दिवालिए हो गए हैं?

शिव : नहीं, नहीं, इससे ज्यादा मेरे पास कभी थे ही नहीं!

कर्नल : मैं जानता हूं, करोड़पति लोग थोड़े सनकी होते हैं, पर आप तो हद कर रहे हैं!

कान्ति : डैडी, श···

शिव : करोड़पति? आपने मुझे क्या समझ लिया है?

कर्नल : छोड़िए, आप जानते हैं कि आप कौन हैं?

कान्ति : सेठ छदामी लाल जी, लगता है आप हमारे साथ कोई मजाक कर रहे हैं।

शिव : माफ कीजिए, यह मेरा नाम नहीं है।

बृज : क्या?

शिव : हाँ! मेरा नाम शिवपूजन सहाय है। १९२५ में गुजराँवाला में पैदा हुआ और पार्टीशन के वक्त शरणार्थी बनकर यहाँ आया, सन् ४८ से बिजली के महकमे में काम कर रहा हूं, अब डेसू में। वैसे फिलासिफी पढ़ने का मुझे बड़ा शौक है।

(सब खड़े हो जाते हैं।)

कान्ति : बिजली!

छाया : बिजली!

बृज : आपका मतलब है, आप नहीं?

हरीश : बेशक नहीं!

शिव : लेकिन आपने कैसे सोच लिया कि मैं हूं

हरीश : तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई।

(टार्च खींच लेता है।)

शिव : टार्च दे दीजिए ?

हरीश : आए हैं लगाने फ्यूज और दे रहे हैं भाषण ! सूईयों के प्रतीक अर्थ बता रहे हैं, हमें उल्लू बना रहे हैं।

कर्नल : आप ठीक कहते हैं। यह बदतमीजी है।

शिव : (घबरा कर) हैं !

(कर्नल टार्च लेकर शिव के चेहरे पर फेंकता है।)

कर्नल : तुमने यहाँ आकर पहले बहरा होने का नाटक किया और फिर बिन कहे, बिन बुलाए सबको लम्बा-चौड़ा भाषण पिला डाला।

शिव : माफ कीजिए। मुझे बुलाया गया था।

कर्नल : जवाब मत दो मेरे दिनों में इस बतमीजी के लिए तुम्हें यहीं और इसी वक्त गोली से उड़ा दिया जाता।

कान्ति : डैडी ठीक कहते हैं। यह लोग होते ही ऐसे हैं।

कर्नल : (टार्च बृज को देते हुए) मेहता, नामाकूल को इसका काम समझा दो !

बृज : मेन स्विच नीचे तहखाने में है। वह दरवाजा है—समझे ?

शिव : (गुस्से में) समझ गया। इसी काम के लिए तो आया हूं।

(कोट और बैग उठाता है। कुर्सी को देखकर)

यह कुर्सी कितनी खूबसूरत है।

(बृज कुर्सी देखकर घबरा उठता है। छुपाने का प्रयास)

बृज : तुम तहखाने में क्यों नहीं जाते ?

शिव : किधर से ? कैसे ?

बृज : कान्ति ! प्लीज दरवाजा खोल दो !

कान्ति : मैं ?

(समझकर)

हाँ—मैं !

(वह दरवाजे को खोलने की कोशिश करती है।)

कर्नल : (व्यंग्य) बृज ! तुम वाकई बहादुर हो।

बृज : मुझे अचानक कमर में दर्द हो गया है। बहुत देर तक अन्धेरे में रहने से अक्सर हो जाता है।

कान्ति : क्या फिर हो गया।

बृज : लगता है।

हरीश : लाओ, मैं खोल दूं। मैं तुम्हारे दोस्त की तरह से मरियल नहीं हूँ।

(शिव से)

जाइए—अन्दर !

शिव : अलविदा ! मैं कला का प्रकाश, विज्ञान के अन्धेरे में छोड़े जा रहा हूं !

हरीश : जबान कम चलाओ तो बेहतर।

शिव : माफ कीजिए !

(शिव जाता है। पर्दे के पीछे से छाया के गाने की आवाज ! ऊपर शालू पीती हुई आवाज सुनकर बाहर आ जाती है। और सीढ़ियों के ऊपर खड़ी हो जाती है)

बृज : लगता है, अब कुछ नहीं होगा।

कान्ति : खुश हो जाओ प्रिय ! कुछ ही मिनटों में लाइट आ जाएगी और सेठ छदामीलाल लाइट में आएँगे। वो तुम्हारी कला देखेंगे, खुश होंगे और तुम्हारी सारी मूर्तियाँ लाखों रुपए में खरीद लेंगे।

बृज : (व्यंग) हाँ, जरूर !

कान्ति : तब हम एक आलीशान मकान खरीद कर उसमें रहेंगे ।
मैं शादी के बाद फौरन यह जगह छोड़ देना चाहती हूं !

(शालू सुन लेती है । उसका मुंह आश्चर्य से खुला रह जाता है ।)

बृज : श•••••• !

कान्ति : मैं शादी के बाद कम से कम दो साल तक तो यहाँ बिल्कुल नहीं रहना चाहती ।

बृज : श•••! श•••!!

कान्ति : क्या मुश्किल है तुम्हें ?

बृज : दीवारों के भी कान होते हैं । आज की रात बड़ी मुसीबत की रात है । कहीं मुसीबत और बढ़ न जाए ।

कान्ति : समझ गयी । आज की शाम तुम्हारे लिए मनहूस शाम थी । पर अब घबराने की कोई बात नहीं । मैं किसी को नहीं आने दूंगी ।

(शालू आवाज को लक्ष्य कर प्याले से शराब नीचे फेंकती है ।)

वाह !!!

बृज : यह क्या ?

कान्ति : बारिश हो रही है ।

बृज : मजाक क्यों करती हो ।

कान्ति : देखो, मेरे कपड़े गीले हो गए हैं ।

बृज : यह कैसे हो सकता है ?

(शालू और फेंकती है । इस बार हरीश पर भी पड़ती है ।)

हरीश : ए, यह क्या हो रहा है ?

बृज : क्या !

कर्नल : तुम सब लोगों को क्या तकलीफ है। किसलिए भन्ना रहे हो।

(शराब कर्नल के मुंह पर पड़ती है।)

आह !!

बृज : लगता है पानी लीक हो रहा है।

हरीश : गुड गाड।

बृज : यही हो सकता है।

(शालू अपना मग सीढ़ियों पर फेंक देती है। घबराहट भरी खामोशी। सभी ऊपर देखते हैं।)

हरीश : यह क्यों नहीं कहते कि ऊपर कोई है।

बृज : मारे गए !

कर्नल : कौन है ?

(खामोशी)

कर्नल : कौन है ? सामने आओ।

बृज : यह जरूर शीला है।

(शालू हैरान)

कर्नल : कौन ?

बृज : शीला, बर्तन साफ करने वाली। वह सोम, बुध और शुक्र को आती है।

कर्नल : पर आज तो इतवार है।

बृज : हाँ, याद आया उसने परसों कहा था कि वो शाम को

छः बजे आकर देख लेगी। सफाई कर देगी।

कर्नल : क्या बकते हो। अब ग्यारह बज चुके हैं।

हरीश : ईमानदार नहीं लगती। हो ही नहीं सकती।

कान्ति : आजकल कहाँ मिलती हैं !

कर्नल : हम देखेंगे। शीला !

बृज : उसे टोकिए नहीं। काम करते वक्त उसे यह सब पसन्द नहीं। छोड़िए, उसे काम करने दीजिए।

कर्नल : हमें देखने दो। शीला, ऊपर तुम हो ?

(शालू खामोश रहती है।)

(चिल्लाते हुए) शीला !

शालू : **आवाज बनाते हुए)** हाँ जी !

बृज : वही है, वही है। शीला, तुम इस वक्त यहाँ क्या कर रही हो ?

शालू : आपके बैडरूम की सफाई कर रही हूं।

बृज : इस वक्त !

शालू : न होने से तो अच्छा है। मैं जानती हूँ कि आपको साफ-सुथरा बैडरूम बहुत पसन्द है। फिर आज आपके मेहमान भी तो आने वाले हैं।

बृज : हाँ, हाँ, हाँ, बिल्कुल ठीक···

कर्नल : तुम कब आईं ?

शालू : थोड़ी-सी देर पहले।

हरीश : हम पर पानी तुम्हीं डाल रही थीं ?

शालू : पानी ! नहीं तो। जरूर कुछ गड़बड़ हो गयी। बिलकुल अन्धेरा है न। क्या आप छुपन-छुपाई खेल रहे हैं !

बृज : नहीं शीला। फ्यूज उड़ गया है। इसीलिए सारे घर में अन्धेरा है।

शालू : अच्छा, फ्यूज ! मैं समझी आप छुपन-छुपाई खेल रहे हैं, इसलिए अन्धेरा कर रखा है।

(नीचे आने लगती है।)

बृज : कहा न फ्यूज उड़ गया है। आदमी ठीक कर रहा है। बस किसी भी वक्त लाइट आ सकती है।

शालू : तब आपको थोड़ी राहत मिलेगी।

(कमरे में नीचे आ जाती है।)

बृज : हाँ ! तुम अब घर क्यों नहीं चली जातीं ?

शालू : मुझे बेहद अफसोस है कि मैं पहले नहीं आ सकी। मेरी मेरी बेटी कुछ बीमार हो गयी थी।

बृज : अच्छा, अच्छा, समझ गया।

(वह उसे छिपाने की कोशिश करता है। वह उसकी कोशिश को नाकाम करती है।)

शालू : उसके पेट में बड़ी दर्द होती है। उसके पेट में माँस का गुच्छा-सा लटक रहा है।

हरीश : बड़ी तकलीफ में होगी।

शालू : बहुत ज्यादा। मेरी बच्ची।, कल अस्पताल में ले जाकर अच्छी तरह से दिखलाऊँगी।

बृज : तुम अपनी बच्ची के पास जल्दी से चली जाओ। इधर रात को तुम्हारे लिए कोई काम नहीं है।

शालू : सच कह रहे हैं ?

बृज : हाँ, हाँ,

(दोनों करीब)

शालू : मुझे आज मालूम हुआ कि आपकी कोई शाम ऐसी भी हो सकती है। इतने सारे लोग, शराब की बोतलें और सिंक में बर्तन और न जाने क्या-क्या···

(बृज उसका हाथ दबाता है। वह उसे काट लेती है। वह पीड़ा में उसके सामने घुटने टेक कर बैठ जाता है।)

कर्नल : तुम शायद जानती नहीं कि मिस्टर मेहता की मंगेतर के सामने बात कर रही हो।

शालू : मँगेतर !

कर्नल : हाँ, मेरी बेटी कान्ति !

शालू : अच्छा, हाँ···मुझे पता नहीं था। मुझे बड़ी खुशी हुई। मँगेतर ! वाह साहब, आपने मुझे तो बताया ही नहीं !

बृज : (घुटनों पर) हाँ, मैं सोचता था कि सभी को सरप्राइज दूंगा !

शालू : कितनी अच्छी बात है यह। मैं आपको मुबारिक बाद दे सकती हूँ ?

बृज : (घुटनों पर ही) हां, हां, क्यों नहीं···

(शालू बृज के कान मरोड़ देती है।)

शालू : मुबारिक हो।

(कान्ति से)

आपको भी।

कान्ति : शुक्रिया !

शालू : (कर्नल से) और साहब आपको भी !

कर्नल : शुक्रिया !

शालू : आप शालू के डैडी हैं न ?

कर्नल : शालू ? मैं समझा नहीं।

(बृज फर्श पर ढेर हो जाता है। उदास। हारा हुआ। उसके लिए जैसे सारा खेल खत्म)

शालू : (कान्ति से) आखिर तुमने इसे पा ही लिया मिस शालू ! मैंने तो सोचा भी नहीं था—कि चार साल के बाद भी···

बृज : नहीं—नहीं—नहीं—नहीं···

शालू : अगर मैं कुछ बिन मौके बोल रही हूं तो मुझे माफ करना बृज ! लेकिन किसी लड़की के साथ चार साल तक कोर्ट शिप करके फिर उसे छोड़ देना। चार साल बहुत लम्बा अरसा होता है, आज कल तो चार दिन भी बहुत होते हैं।

बृज : शीला, यह क्या !

कान्ति : चार साल !

शालू : हाँ, चार साल।

(धीरे से)

यह तो अच्छा हुआ कि मैं वक्त पर आ गयी।

(कान्ति विरक्ति के भाव में चीखती है। बृज कान बन्द कर देता है।)

मैं जब से यहाँ आई हूं, देख रही हूँ कि वह तुम्हारे साथ चिपका हुआ और मुझे शीला महरी बना दिया। मैंने इससे ऊपर पूछा तो इसने कहा—घबराओ नहीं, शालू की जो जगह मेरे दिल में है, वो किसी और की नहीं हो सकती। मैंने पूछा—तो बेचारी कान्ति का क्या होगा ? जानती हो इसने क्या कहा—कान्ति ! उसका क्या है बस थोड़े दिनों की मुहब्बत का ढोंग है उसके साथ।

असली मुहब्बत तो तुम्हारे साथ है। मुझे कहता है कि कान्ति तो ऐसी लड़की है जो थोड़े से वक्त में ही किसी के साथ बिस्तरबाजी कर सकती है, बस बिस्तरबाजी के लिए ठीक है।

(लम्बा पास ! पूरी स्थिति शालू के हाथ में)

कर्नल : (मुर्दानगी) तुम इसे चार साल से जानती हो ?

शालू : हाँ, कर्नल साहब, चार साल और इसी कमरे में।

हरीश : मैं इस आवाज को पहचानता हूं। यह शालू है !

कान्ति : शालू !

बृज : (ढोंग करते हुए) शालू !

शालू : क्यों हैरानी हुई ?

कान्ति : (समझती हुई) हूं, शालू !

कर्नल : क्या हो रहा है इस कमरे में ! मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा।

शालू : हां, साहब, यह कमरा ही कुछ अजीब है। क्यों ? यह जादू का कमरा है, जहाँ छत से बारिश होती है। और बर्तन साफ करने वाली शीला घर की मालकिन बन जाती है।

बृज : (चिल्ला कर) चुप रहो !!!

हरीश : शालू !

शालू : हरीश ! तुम हमारे बीच मत आओ।

हरीश : तुम हर मुसीबत की जड़ हो।

शालू : हाँ यह तो बृज से पूछो। तुम पक्के हरामी हो हरीश ! पत्थर के बुतों के साथ रहते-रहते तुम्हारा दिल भी पत्थर का एक टुकड़ा बन गया है।

बृज : चुप रहो। शालू ! चुप रहो !

शालू : चलो विरोध में तुमने मेरा सही नाम तो लिया। तुम खेल हार गए हो बृज। अब चिल्लाने से कोई फायदा नहीं, तुम डरपोक और बेवकूफ हो। एकदम डरपोक। मुझसे तुम शादी नहीं करना चाहते थे, इसलिए तुमने यह सारा नाटक किया।

कान्ति : शादी ?

कर्नल : शादी !

शालू : पूरे चार साल इसके साथ काटने के बाद सब बेमानी हो जाए। यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती।

कान्ति : डैडी, इसे चुप कराओ। रोको !

कर्नल : मैं क्या कर सकता हूं ?

कान्ति : तुम कैसे इतनी हिम्मत बटोर कर बात कर रही हो। हो कहां ?

(कर्नल कान्ति के पास जाता है, लेकिन गलती से शालू का हाथ अपने हाथ में से लेता है।)

कर्नल : अब चुप हो जाओ बेबी। लो मेरा हाथ पकड़ो और समझो कि हर चीज हमारे कन्ट्रोल में है। ठीक ?

शालू : कर्नल साहब, आपको यकीन है कि आपके हाथ में आपकी बेटी का हाथ है ?

कर्नल : यह क्या ? कान्ति ! यह तुम्हारा हाथ नहीं है ?

कान्ति : नहीं !

शालू : आप पिछले बीस सालों से तो अपनी बेटी के साथ रह रहे होंगे। आँखों का इस्तेमाल तो आप अच्छा कर लेते हैं।

(पास ! कर्नल परेशानी और लज्जा में दूसरी ओर जाता है।)

शालू : अच्छा चलो एक खेल खेलते हैं। खेल है हाथ से अनुमान लगाना।

हरीश : हे खुदा !

शालू : या हरीश होंठ से होंठ लगाकर अनुमान लगाएगा। क्यों ?

कान्ति : कितनी गन्दी बात !

शालू : यह मैं हूं कान्ति, मल्लिका-ए-गन्दगी !

(यह कान्ति का हाथ पकड़ कर हरीश के हाथ में दे देती है।)

अनुमान लगाओ, कौन है ?

कान्ति : मुझे नहीं पता

शालू : अनुमान लगाओ।

कान्ति : मैं नहीं जानती, न मैं परवाह करती हूं।

शालू : फिर भी कोशिश करो !

कान्ति : यह बृज का हाथ है। तुम मेरे साथ चालाकी नहीं कर सकती। यह बृज है।

हरीश : गलत। यह मैं हूं !

कान्ति : यह नहीं हो सकता। तुम झूठ बोल रहे हो।

हरीश : मैं झूठ नहीं बोलता।

कान्ति : तुम झूठे हो। तुम झूठ बोल रहे हो !

हरीश : नहीं। नहीं !

(कान्ति हाथ छुड़ा लेती है। उसे जैसे दौरा पड़ रहा है।)

शालू : अपने दाहिनी ओर का हाथ पकड़कर तुम बताओ !

हरीश : मैं यह बेकार खेल नहीं खेलता।

शालू : खेलो तो सही।

(वह हरीश का हाथ बृज के हाथ में दे देती है।)

बोलो ?

हरीश : यह बृज है।

बृज : हाँ !

शालू : बहुत खूब !

कान्ति : (गुस्से में) यह कैसे हो सकता है कि यह तुम्हारा हाथ पहचानता है और मैं नहीं पहचानती ?

बृज : कान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

कान्ति : मैं जानना चाहती हूं, मुझे जवाब दो !

बृज : छोड़ो !

कान्ति : नहीं !

बृज : तुम्हें दौरा पड़ रहा है।

कान्ति : मैं घर जाना चाहती हूं।

(अचानक छाया चीखती है और पर्दे से बाहर कमरे में आ जाती है। बाकी सभी फ्रीज।)

छाया : (नशे में तेजी और अजीब ढंग से बोलती है।) सुपर बाजार—सुपर बाजार में प्राम—उसमें बच्चे ही बच्चे—बोतलें—कार्नफ्लैक—बिस्कुट—केक और गुब्बारे ! नीली टिकटें, लाल टिकटें, पीली टिकटें, टेलिविजन, डैडी, वो आएगा मोटर साइकिल—हैलमेट—जू…जू…हटो, बचो, भागो, मोटर साइकिल—जू…जू… डैश—टक्कर… बचो हटो, भागो—जू…जू…टक्कर—

(हरीश के साथ टकरा जाती है।)

हरीश : छाया, आओ घर चलें !

छाया : तुम ठीक कहते हो। पर बृज, वो तुम्हारा करोड़पति नहीं

आया—बड़ा लेट हो गया—मैं चलती हूं। आएगा तो मेरी माफी मांग लेना—अच्छा…

बृज : जरूर…जरूर !

(छाया हरीश के बाँहों के सहारे चली जाती है।)

तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया, शालू ! बहुत-बहुत !

शालू : कोई बात नहीं।

बृज : तुम्हें कोई हक नहीं था।

शालू : नहीं ?

बृज : तुमने मेरा अपमान किया है।

शालू : वाकई ?

बृज : तुमने कहा था कि तुम मुझे फिर कभी भी देखना पसन्द नहीं करोगी।

शालू : मैंने तुम्हें देखा ही कहाँ है। तुम्हारा अपमान कहाँ से हुआ ? कैसे कैसे हुआ ? बृज ! तुम अन्धेरे में ही रहो तुम्हें बहुत पसन्द है न !

बृज : क्या मतलब

शालू : इसका मतलब यह है कि तुम मुझे देखना नहीं चाहते। ऐसा क्यों है बृज ?

बृज : मैं कहता हूँ, तुम यहाँ से चली जाओ !

शालू : मैं जानना चाहती हूँ !

बृज : हाँ, तुम हमेशा जानना चाहती हो। क्या जानना चाहती हो ? तुमने जरा भी सोचा कि तुम यह सब क्यों कर रही हो ?

शालू : शायद इसलिए कि मैं तुम्हें बहुत चाहती हूं।

बृज : ऐसा क्या है मुझमें । मैं सिर्फ एक घटिया और झूठा कलाकार हूं !

शालू : अपने आपको क्यों कोसते हो । मैंने तुम्हें कहा था न कि तुम एक अच्छे या झूठे कलाकार—कोई भी एक हो सकते हो । पर तुम्हें मेरी यह बात पसन्द नहीं आई थी ।

बृज : खुदा जाने, तुमने क्या-क्या कहा था ।

शालू : क्या ऐसा तो नहीं कि वो चौबीसों घण्टे तुम्हारी चमचागिरी करके तुम्हारे अहं को तुष्ट करती रहती है और इसलिए तुम उसे ज्यादा पसन्द करते हो !

बृज : तुम्हारे साथ कभी भी मेरी मुहब्बत नहीं रही । तुमने चार साल तक अकेले में मुझ पर नादिरशाही चलाई ।

शालू : यह कहो कि उन चार सालों में तुमने खूब मजे किए ।

बृज : मजे ? मुझे उस एक-एक पल से नफरत थी ।

शालू : हाँ, मुझे याद है ।

बृज : एक-एक पल !

शालू : वह भी याद है ।

बृज : जब तुम बाहर चली गयीं तो वो दिन मेरी जिन्दगी का सबसे अच्छा दिन था ।

शालू : मेरे लिए भी ।

बृज : मैंने चैन की साँस ली ।

शालू : मैंने भी ।

बृज : मैं सारी रात नाचता रहा ।

शालू : मैं भी । वीणा और डफली लेकर ।

बृज : बहुत अच्छा । फिर तो सब ठीक हो गया ।

शालू : बिल्कुल हो गया ।

बृज : बहुत अच्छा !

शालू : धोखा !

बृज : तुम्हें इतना खुश देख कर मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है।

शालू : तुम भी तो खुश हो। एकदम लाल और सन्तुष्ट !

(पास)

बृज : ऐसा था तो फिर तुम वापिस क्यों आई ?

शालू : अगर ऐसा था तो तुमने ऊपर शीला को क्यों कहा कि तुम अभी भी मुझे सबसे ज्यादा प्यार करते हो ?

बृज : मैंने ऐसा नहीं कहा।

शालू : तुमने कहा।

बृज : नहीं !

शालू : हाँ !

बृज : मैंने नहीं कहा। यह तुम्हारी मनगढ़न्त कहानी है।

शालू : मैं—मैंने—मेरी कहानी…

(दोनों हँसते हैं। हँसते हुए शालू बृज के कन्धे पर सिर रख देती है। इसी बीच फ्रीज हुए कर्नल और कान्ति एक्शन में)

बृज : मुझे नहीं पता।

कर्नल : तुम दोनों के लिए ही यह बड़ी अजीब बात है।

शालू : हाँ, बिल्कुल है।

कर्नल : मैं इतनी जल्दी खुश नहीं होता। खैर, सुनो…

बृज : कर्नल साहब, सुनिए…

कर्नल : तुम अपनी जबान बन्द रखो, इस वक्त मैं बोल रहा हूं तुमने जैसे मेरी बेटी के साथ जो व्यवहार किया है, जानते हो मेरे जमाने में तुम्हें इसकी क्या सजा मिलती।

बृज : अनुमान लगा सकता हूं।

कर्नल : जबान बन्द रखो, मैं बोल रहा हूं—

कान्ति : छोड़िए डैडी, चलिए हम घर चलते हैं।

कर्नल : थोड़ी देर तक यह बात मुझ पर छोड़ दो बेबी ।

बृज : कर्नल साहब, मैं सब बता सकता हूं—

कान्ति : बता सकते हो । क्या बता सकते हो ?

बृज : यहाँ पर । यह बहुत मुश्किल है ।

कान्ति : डैडी, आप समझे ?

बृज : कान्ति ! तुम समझती क्यों नहीं ।

कान्ति : समझने को अब बचा ही क्या है । मुहब्बत मुझसे करते रहे और पीठ पीछे···बस इसके अलावा और क्या समझना है ?

(मँगनी की अँगूठी उतारती है ।)

बृज : यह क्या ?

कान्ति : तुम्हारी अंगूठी । अपनी मनहूस अँगूठी वापिस लो ।

(फेंक देती है, जो कर्नल की आँख पर लगती है ।)

कर्नल : मेरी आँख—हाय, मेरी आँख !

(शालू हंसने लगती है ।)

और हँसो । मि० मेहता ! मैंने तुमसे पूछा था, जानते हो मेरे दिनों में इस तरह करने से तुम्हारा क्या हश्र होता ?

बृज : हश्र ?

कर्नल : तुम्हारी अच्छी मरम्मत होती ?

बृज : मरम्मत—

कर्नल : इस धोखे के लिए मैं तुम्हारी कोड़ों से पिटाई करता और तुम घुटने टेक कर मेरी बेटी से माफी माँगते ।

बृज : वाकई ?

कर्नल : तुम दया और क्षमा की भीख माँगते । अपनी सुअर जैसी

आवाज से।

(तभी चीख की आवाज के साथ हरीश का प्रवेश। उसके हाथ में लौ।)

हरीश : ओह।···तुम चोर-गुण्डे !

बृज : हरीश !

हरीश : तुम बदमाश, हरामी !

बृज : हुआ क्या है ?

हरीश : तुमने मेरे कमरे की हालत देखी है ? मेरा कमरा ? मेरा प्यारा कमरा, पूरे शहर में ऐसा कमरा किसी का नहीं है। और तुमने, एक कुर्सी उल्टी पड़ी है, दूसरी उसके ऊपर। मेज कहीं तो—जैसे किसी कबाड़िए की दुकान हो। क्यों बोलो ?

बृज : क्या ?

हरीश : अब बड़े भोले न बनो। मैं सोचता था कि तुम मेरे बड़े अच्छे दोस्त हो, पर क्या पता था कि मैं आस्तीन में साँप पाल रहा हूं।

बृज : हरीश !

हरीश : यह तुमने मुझे मेरी दोस्ती का सिला दिया। मैं सालों तक तुम्हारे घर को सजाता-सँवारता रहा, सिर्फ इसलिए कि तुम यह काम करने में सुस्त हो और मेरे दोस्त हो और आज तुमने अपनी इस नयी छोकरी और उसके बाप पर रौब दिखाने के लिए मेरा सामान चुरा लिया। लगता है इसने भी तुम्हारी मदद की ?

बृज : हरीश, मैं मुसीबत में था।

हरीश : बकवास नहीं करो। मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। तुमने मुझे समझ क्या रखा है ? तुम दोस्त कहलाने लायक

नहीं। तुम चोर हो।

बृज : यह ठीक नहीं है।

हरीश : तुमने कान्ति के बारे में सबसे बाद में मुझे बताया। सब अजनबियों के बीच मुझे जानना पड़ा। मुझे—जिसने हर सुबह तुम्हारी तकलीफों को सुना और हल करने की कोशिश की। औरतों के बारे में घण्टों बोर करने वाली बातें मैंने सुनीं और इसके बाद भी मेरे साथ धोखा !

शालू : (कान्ति की ओर इशारा करते हुए) उसे नजर अन्दाज कर दो !

हरीश : उसे नहीं शालू, नजर अन्दाज तुम्हें किया जा रहा है।

(बृज से)

और तुम ! तुम्हारे बारे में मैं यही कह सकता हूं कि तुम दोनों—तुम और कान्ति—एक दूसरे के लिए बिलकुल ठीक हो। चोर का भाई जेब कतरा !

(कान्ति चीखती है।)

बृज : कान्ति !

हरीश : अच्छा तो तुम भी यहाँ हो।

बृज : उसे अकेला छोड़ दो !

हरीश : घबराओ नहीं। मैं उसे नहीं छूऊँगा। मुझे अपना सामान वापिस चाहिए। सुना तुमने ? या तो मुझे इसी वक्त मेरा सामान लौटा दो या मैं पुलिस को बुलाऊँ !

बृज : मजाक मत करो।

हरीश : सामान—नं० १—राजशाही तिल्ले के काम वाली कुर्सी। नर्म गद्देदार !

बृज : तुम्हारे सामने पड़ी है।

हरीश : हूं। सामान नं० २ राजशाही कुर्सी की ही तरह से एक

सोफा। हरे सिल्क से ढंका हुआ।

बृज : स्टूडियो में।

हरीश : नामुमकिन ! मुगलकालीन फूलदान सन् १७१३। जिसमें खूबसूरत फूल लगे हुए हैं।

बृज : फर्श पर !

हरीश : फर्श पर !

बृज : (उठा कर उसे देता है।)

हरीश : इसके फूल तक तुमने निकाल लिए। मैं सोफा और कुर्सी लेने के लिए एक मिनिट में वापिस आ रहा हूं।

(पीछे हटते हुए)

बृज, आज से हमारे-तुम्हारे सम्बन्ध खत्म ! मुझसे अब कभी बात नहीं करना।

(वह अपना रेनकोट उठाता है, जिसके नीचे छिपी हुई बुद्ध की प्रतिमा गिर कर टूट जाती है।)

हरीश : (चिल्लाते हुए) तुम जानते हो ? इस मूर्ति की क्या कीमत है। जानते हो ? तुम अगर अपने घर का सारा सामान भी बेच दो तो भी इसकी कीमत नहीं चुका सकते, न तो तुम सारी जिन्दगी इतना पैसा कभी देख सकते हो। बृज मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा।

बृज : हरीश, इतनी जल्दबाजी अच्छी नहीं।

हरीश : हाँ, मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा—नहीं छोडूंगा। सत्यानाश कर दूंगा। सत्यानाश के लिए सत्यानाश—

(हरीश पागलों की तरह से त्रिशूल को तलवार की तरह से उठा कर बृज की ओर बढ़ता है। बृज पीछे हटता है।)

बृज : रुको, हरीश, रुको। तुम पागल हो गए हो।

कर्नल : बहुत अच्छा ! लगता है। फैसले का वक्त आ गया है।

(दूसरा त्रिशूल उठा लेता है।)

बृज : (दोनों से पीछे हटाता है।) कर्नल ! प्लीज रुकिए। जरा सोचिए। हमें जंगलियों की तरह से पेश नहीं आना चाहिए। हरीश ! मेरी तुमसे प्रार्थना है। तुम तो हमेशा सभ्य रहे हो ! फौजी के साथ फौजी मत बनो।...

कान्ति : डैडी, पकड़ो ! इसे पकड़ो ! पकड़ लो !

बृज : (घबराकर) कान्ति !

कान्ति : इसे पकड़ो ! पकड़ो ! ! पकड़ो ! !

बृज : शालू !

(शालू उछल कर लैम्प की बत्ती बुझा देती है। प्रकाश तेज)

कर्नल : सत्यानाश !

शालू बृज का हाथ पकड़ कर खतरे से बाहर कर देती है।)

(शालू से) बेबी, मेरी बच्ची, जरा ध्यान से। रास्ते में नहीं आना !

हरीश : (कान्ति से) एकदम खामोश ! खामोशी में उनकी साँसें सुनाई देंगी।

कर्नल : बहुत खूब ! क्या चालाक तरकीब !

(खामोशी। बृज शालू को लेकर मेज पर चढ़ जाता है। हरीश और कर्नल अपने त्रिशूल घुमाते हुए इधर-उधर ढूंढ़ते हैं। बीस सैकन्ड बाद शिव

पूजन दरवाजा खोलकर ऊपर आता है। दोनों उसकी ओर बढ़ते हैं। वह लौट जाता है। अपने पंजों के बल पर हरीश और कर्नल दूसरी ओर से आने वाले एक व्यक्ति की ओर बढ़ते हैं। यह सेठ छदामीलाल है। दाढ़ी, चश्मा, कपड़े और हियरिंग ऐड लगाए हुए। हैरानगी से वह कमरे में आता है।)

छदामीलाल : हलो, मिस्टर मेहता ?

(हरीश और कर्नल उस ओर बढ़ते हैं।)

हरीश : यह इलैक्ट्रिशियन है।

छदामीलाल : हलो, प्लीज !

कर्नल : तुम यहाँ खड़े-खड़े क्या कर रहे हो ?

(शिव आता है।)

तुमने फ्यूज लगा दिया ?

हरीश : क्या आज सारी रात अन्धेरे में ही रखोगे ?

शिव : चिन्ता नहीं करिए। फ्यूज लग गया।

(तहखाने से बाहर निकल आता है।)
(सेठ स्टेज पर इधर-उधर घूमता है।)

हरीश : शुक्र है खुदा का।

छदामीलाल : हलो, प्लीज, मिस्टर मेहता—आप कहाँ हैं ? यह अन्धेरा कैसा ? क्या कोई मजाक कर रहे हैं।

शिव : ओह, यह क्या। आप मेरी आवाज की नकल कर रहे हैं। आप लोग बड़े बेशर्म हैं।

छदामीलाल : मिस्टर मेहता ! मैं यहाँ आपकी मूर्तियाँ देखने के लिए आया हूं।

शिव : अन्दर आइए।

छदामीलाल : अच्छा, अन्दर !

बृज : ओह ! यह तो सेठ छदामीलाल हैं !

शालू : वह आ गए !

हरीश : सेठ छदामीलाल !

कर्नल : सेठ छदामीलाल !

(फ़्रीज। सेठ तहखाने की ओर जाता है।)

बृज : घबराइए नहीं सेठ साहब। फ्यूज उड़ गया था। अब ठीक हो गया है !

छदामीलाल : (खीझ से) मिस्टर मेहता !

शालू : इन्हें कम सुनता है। सबको ऊँचा बोलना पड़ेगा।

बृज : घबराइए नहीं सेठ साहब। फ्यूज उड़ गया था, पर अब सब ठीक है।

(मेज पर शालू और बृज ताली बजाते हैं। बृज तहखाने में गिरते-गिरते बचता है।)

हाँ शालू, बिलकुल ठीक। वक्त पर सब कुछ ठीक हो गया।

(बृज के यह कहते ही सेठ मुड़ता है और तहखाने में गिर पड़ता है। शिव ऊपर पाँव से दरवाजा बन्द कर देता है।)

शिव : अब समझिए, आपको सभी मुसीबतों से छुटकारा मि[illegible] गया। मैं अब आपको सृष्टा का सबसे अमोल[illegible] देता हूं—प्रकाश !

शालू : प्रकाश !

बृज : शुक्र खुदा का !

(शिव स्विच के पास जाता है।)

हरीश : बृज, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं उसे शुक्रिया अदा करता, न कि खुदा को।

कर्नल : मैं भी यही करता।

कान्ति : मैं तुम्हारी जगह होती तो मैं भी यही कहती।

शिव : तब आप सब मेरा शुक्रिया अदा कीजिए, क्योंकि इस समय मैं ही सूर्य का काम करूँगा।

(ताली बजाते हुए)

मेरी ओर ध्यान दीजिए। परमात्मा ने कहा—प्रकाश होने दो, और प्रिय लोगो अचानक—चमत्कारिक—तत्क्षण—कल्पनातीत—असीम—अदम्य और शाश्वत प्रकाश हो गया—प्रकाश !

(शिव स्विच आन करता है। तभी तेज रोशनी के साथ एकदम गहरा अन्धेरा। फ्यूज उड़ जाता है।)

(संगीत उभरता है और अन्धेरे में ही डूब जाता है।)

॥ पर्दा ॥

हरीश.

छदामीलाल :

१.

शिव : अ

अ.

छदामीलाल : मि

आया